04 - सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द पर विवाद के मायने

05 - भारतीय राष्ट्रवाद के जागरणकर्ता स्वामी विवेकानंदह्व

06 - एक पखवाड़े की बारिश से ही डामर सड़कों की हालत खराब

07 - राष्ट्रीय खेल नीति 2025: मशीन की आँख से खेल

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 04 जुलाई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 295, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

पाक : 'जिहादवाद' का खेल, खेल रहे मुनीर असल में बाजी हार रहे हैं...

प्रवीण स्वामी

पिछले सप्ताह एक फिदायीन बमवर्षक विमान ने वजीरिस्तान के मीर अली में एक फौजी काफिले पर हमला करके 13 सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया और दर्जनों अन्य को घायल कर दिया। इस इलाके में पिछले एक साल से सैनिकों पर लगातार हमले हो रहे हैं। 'साउथ एशिया टेररिज्म पोर्टल' के मुताबिक, पिछले साल 754 सैनिक मारे गए, जो पिछले एक दशक में सबसे बड़ी संख्या है।

इन हमलों का सामना होते ही पाकिस्तानी सेना ने जिहादियों और बलूच दुश्मनों को अवैध घोषित करने की की कोशिश की है और अपने आधिकारिक बयानों में धार्मिक आधार का इस्तेमाल करते हुए उन्हें भारत द्वारा प्रायोजित 'फितना' (लड़ाई) का एजेंट बताया है। पाकिस्तान के फौजी वर्चस्व वाले सत्ता-तंत्र को भी अच्छी तरह पता है कि असली कहानी कहीं ज्यादा पेचीदा है। 2021 में खैबर-पख्तूनख्वा के हजारों लड़ाकों की बड़ी शिरकत के कारण काबुल के पतन के बाद जिहादी अपने घरों में लौटने लगे ताकि सीमा पार के कभी अपने सहयोगी रहे लड़ाकों की तरह सत्ता और दौलत भोग सकें। पाकिस्तानी सेना के लिए ये सारे जिहादी दुश्मन नहीं, संभावित सहयोगी हैं। पाकिस्तानी फौज अपनी पूर्ववर्ती उपनेशवादी शासकों की तरह अफगानिस्तान पर हवाई हमले करती रही है और जिहादियों के गढ़ों को कमजोर करने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल करती रही है। इस सप्ताह की गई फिदायीन बमबारी की खुली ज़िम्मेदारी कबूलने वाला हाफ़िज़ गुल बहादुर उत्तरी वज़ीरिस्तान की उत्मंजई वज़ीर जनजाति के माडा खेल कबीले में साल 1961 के आसपास पैदा हुआ था। उसका परिवार खुद को ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ने वाले, ईपी के फ़क़ीर मिर्ज़ा अली खान वज़ीर का वंशज बताता है। गुल बहादुर ने मुलतान में मदरसे में पढ़ाई की और 'हाफ़िज़' बना। 'इस मामले में गुल बहादुर फील्ड मार्शल आसिम मुनीर की बराबरी करता है। इसके बाद वह फज़्ल-उर-रहमान के नेतृत्व वाली मजहबी जमीअत उलेमा-ए-इस्लाम पार्टी का कार्यकर्ता बन गया।

यह जिहादी सरगना 9/11 वाले कांड के बाद के वर्षों में खबरों में आया जब वह तालिबान के पहले इस्लामिक अमीरात के पतन की आशंका में अफगान सीमा पार करके दक्षिण की ओर भाग गया। अल-क़ायदा से जुड़े सैकड़ों उज्बेक और चेचेन लड़ाकों के साथ मिलकर गुल ने उत्तरी वज़ीरिस्तान में अपना अड्डा बना लिया।

पाकिस्तान ने अपनी जमीन पर इन मिनी-अमीरातों को बनने तो दिया, लेकिन उनके सरगनाओं पर दबाव डालता रहा कि वे विदेशी लड़ाकों को अपने दायरे से बाहर करें। पत्रकार दाऊद खट्टक ने लिखा है कि इसके कारण 2004 के बाद से नेक मुहम्मद वज़ीर, बैतुल्लाह महसूद, और मुल्ला फज्लुल्लाह जैसे कई प्रमुख जिहादियों के साथ कई शांति समझौते किए गए। सरकार 2009 में स्वात में शरिआ पर आधारित निज़ाम-ए-अदल नियम लागू करके कुछ जिहादियों को तो कानूनी सत्ता भी देने को राजी दिखी। इनमें से कुछ समझौते कायम रहे। इसकी कुछ वजह यह थी कि जिहादी कमांडर विदेशी लड़ाकों के अपने केंद्रीय गुट को छोड़ने को तैयार नहीं थे। अमेरिका ने अल-क़ायदा के खिलाफ जो ड्रोन युद्ध शुरू किया उसने पाकिस्तानी सेना के ग्राहक जिहादियों को और ज्यादा नाराज कर दिया। गुल उत्तरी वज़ीरिस्तान को अपना अड्डा बनाकर वहां से अमेरिकी और अफगानी फौजों पर हमला करता रहा और यह वादा करता रहा कि वह पाकिस्तानी फौज को निशाना नहीं बनाएगा। लेकिन यह समझौता 2012 में टूट गया, जब गुल ने अपने इलाके में सरकार को पोलियो टीकाकरण करने से रोक दिया। 2014 में अमेरिका के बाहरी दबाव के कारण पाकिस्तानी सेना ने 'ज़र्ब-ए-अज़्ब' नामक विशाल सैन्य कार्रवाई शुरू की जिसका लक्ष्य इन गुटों को नष्ट करना था। इन गुटों ने मिलकर तहरीक-ए-तालिबान (टीटीपी) बना लिया था। लड़ाई में टीटीपी ने अपने हजारों लोग गंवाए लेकिन गुल उत्तर की ओर भागने में सफल रहा, जहां उसे तालिबान के दूसरे इस्लामिक अमीरात के दूसरे नंबर के वर्तमान कमांडर सिराजुद्दीन हक्क़ानी जैसे ताकतवर तालिबानी नेताओं से शरण मिल गई।

काबुल के पतन ने पाकिस्तानी सेना के लिए नई समस्याएं खड़ी कर दी। ऐसे अधपढ़े, संभावनाहीन युवा अफगानिस्तान से वापस अपने देश लौटने लगे जिन्होंने जीवन में जिहाद के सिवा कोई अनुभव नहीं हासिल किया था। पाकिस्तानी सेना ने इन्हें नए पख्तून तहफ्फुज आंदोलन के खिलाफ अपना सहयोगी माना। जिहादियों के नेता जल्दी ही खुद को सेना के सहयोगी से ज्यादा अहम समझने लगे। गुल के संगठन ने अपने कब्जे वाले इलाकों में शासन के नियम पिछले साल घोषित किए, जिनमें धार्मिक दान और टैक्स, शेविंग पर रोक, और महिलाओं की पोशाक से संबंधित नियम शामिल हैं। फील्ड मार्शल आसिम मुनीर तीन कारणों से शायद इसे व्यापक रणनीतिक लक्ष्यों के मद्देनजर अदा की जाने वाली कीमत के रूप में लेते हैं। पहला यह कि वैश्विक जिहादी आंदोलन से टीटीपी का गहरा रिश्ता है। इस्लामिक स्टेट के तत्वों से भी आइएसआइ इस उम्मीद में यदा-कदा सहयोग करता रही कि वे भारत के खिलाफ उसके काम के साबित होंगे।

जिहादियों की दूसरी बड़ी भूमिका यह थी कि वे पाकिस्तान में बेहतर जम्हूरियत और मानवाधिकारों के लिए धर्मनिरपेक्ष-लोकतांत्रिक संघर्षों पर लगाम लगाने में काम आते थे। सेना का मानना है कि आतंक फैलाकर ही इन्हें कामयाब होने से रोका जा सकता है।

माना जाता है कि इस्लाम और पाकिस्तान की मजहबी पहचान के रक्षक के रूप में फील्ड मार्शल मुनीर की साख को मजबूत करने में खैबर-पख्तूनख्वा में जिहादियों के साथ सौदा मददगार होगा। यह लक्ष्य पंजाब को लेकर भी नजर आता है, जहां धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा और कथित ईश-निंदकों की हत्याओं के मामलों पर मुनीर ने चुप्पी साध रखी है। लेकिन उनसे पहले जितने जनरल हुए, उन सबको यही सबक मिला कि पाकिस्तानी जिहादवाद को अपनाना खतरनाक ही साबित हुआ है, और यह प्रायः अल्पकालिक उपक्रम ही रहा। जनरल परवेज़ मुशर्रफ के कार्यकाल में उनकी हत्या की कम-से-कम चार कोशिशें हुईं। टीटीपी से कई शांति समझौते करने वाले जनरल राहिल शरीफ ने 2014 में खुद को लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर पाया। जनरल क़मर जावेद पाहवा को जल्दी ही पता लग गया था कि काबुल के पतन ने पाकिस्तान की समस्याओं का समाधान करने से ज्यादा उसे और खतरे में डाल दिया, क्योंकि वैचारिक महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित हथियारबंद जिहादी हथियारों के बड़े जखीरे के साथ पाकिस्तान लौटने लगे थे।

इस जोखिम भरे दौर से उबरने का एक ही उपाय है पाकिस्तान अपने दरवाजे सच्ची जम्हूरियत के लिए खोल दे। लेकिन यह एक कदम उठाना मौजूदा या किसी और फील्ड मार्शल के लिए बहुत भारी होता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

भारत में लोकतंत्र सिस्टम नहीं, संस्कार है : प्रधानमंत्री

● पीएम मोदी बोले-हम दुनिया के लिए हैं शक्ति स्तम्भ

घाना में नेशनल अवॉर्ड मिलना बड़े सम्मान की बात

एक्रॉ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को घाना की संसद को संबोधित किया। उन्होंने कहा, आज इस प्रतिष्ठित सदन को संबोधित करते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है। घाना में होना सौभाग्य की बात है। यह लोकतंत्र की भावना से भरी हुई धरती है। घाना पूरे अफ्रीका के लिए प्रेरणा का केंद्र है। मोदी ने कहा, भारत लोकतंत्र की जननी है। यह हमारे लिए एक सिस्टम नहीं, बल्कि संस्कार है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत दुनिया के लिए शक्ति का स्तंभ है। एक मजबूत भारत एक स्थिर और समृद्ध दुनिया में योगदान देगा।

पीएम मोदी ने कहा, घाना के राष्ट्रपति जॉन महामा से कल नेशनल अवॉर्ड मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है। भारत के 140 करोड़ लोगों की ओर से, मैं इस सम्मान के लिए घाना के लोगों को धन्यवाद देता हूं। हमारी दोस्ती आपके मशहूर शुगर लोफ अनानास से भी मीठी है। पीएम मोदी 2 जुलाई से 10 जुलाई तक विदेश यात्रा पर हैं। इस दौरान वे 5 देशों में जाएंगे। घाना उनका पहला पड़ाव है।

झुग्गी बस्तियों का विस्तार रोकने बनेगी कार्ययोजना

लाड़ली बहनों को आर्थिक सहायता के साथ आवास दिए जाएंगे

सीएम डॉ. यादव ने की नगरीय विकास एवं आवास विभाग की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के नगरों में झुग्गी बस्तियों के विस्तार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से, लोगों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए किफायती और सुविधाजनक आवास सुविधा विकसित करने कार्य-योजना बनाई जाए। नगरीय क्षेत्र में पर्यावरण की बेहतरी के लिए उद्यानों को विकसित करना और विकास प्राधिकरण, हाउसिंग बोर्ड सहित सभी आवासीय परियोजनाओं में पौध-रोपण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल के बड़े तालाब के आसपास अवैध निर्माण का सर्वेक्षण करवा कर उन पर कार्रवाई के लिए अभियान चलाया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नगरीय विकास एवं आवास विभाग की मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में हुई समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में शहरी क्षेत्रों में कॉलोनियों के विकास में देश के प्रतिष्ठित बिल्डर्स एंड कॉलोनाईजस को जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्रों के साथ औद्योगिक क्षेत्रों में होने वाली आकस्मिक घटनाओं पर नियंत्रण के लिए अग्निशमन सेवा का आधुनिकीकरण तत्काल किया जाए। अंतर्शहरी क्षेत्र में रेल सेवा के विस्तार के लिए नमो ट्रेन की योजना तैयार की जाए। जल्द ही इस पर केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव से चर्चा कर मदद ली जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली बहनों को प्राथमिकता के आधार पर आवास सुविधा उपलब्ध कराई जाए। प्रदेश में मीट-मछली के दुकानदारों को व्यवस्थित करने और उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराने के लिए नगरीय निकायों को शीघ्र कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

विद्यार्थियों को लैपटॉप की राशि अंतरित होगी आज

प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना में 235 करोड़ रुपये की होगी राशि अंतरित

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार 4 जुलाई को प्रातः 11 बजे भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना में लैपटॉप की राशि अंतरित करेंगे। कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह और जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. विजय शाह की भी गरिमामय उपस्थिति रहेगी। स्कूल शिक्षा विभाग की प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना में मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 12वीं बोर्ड परीक्षा में 75 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक अर्जित करने वाले प्रति विद्यार्थी को 25 हजार रुपये की राशि लैपटॉप क्रय करने के लिये उनके बैंक खाते में अंतरित करेंगे। इस वर्ष 94 हजार 234 विद्यार्थियों को लैपटॉप के लिये 235 करोड़ 58 लाख 50 हजार रूपये की राशि दी जा रही है। कार्यक्रम में प्रदेश के 500 से अधिक विद्यार्थी और शिक्षक सहभागिता करेंगे। प्रदेश में पिछले वर्ष 2023-24 में 89 हजार 710 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बैंक खातों में 224 करोड़ 27 लाख 50 हजार रुपये की राशि अंतरित की गयी थी। प्रदेश में यह योजना वर्ष 2009-10 से संचालित हो रही है। पिछले 15 वर्षों में इस योजना में 4 लाख 32 हजार 16 विद्यार्थियों के बैंक खातों में एक हजार 80 करोड़ 4 लाख रुपये की राशि प्रोत्साहन स्वरूप लैपटॉप के लिये अंतरित की जा चुकी है।

संसद का मानसून सत्र 21 से

शुरू हो गई तैयारी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दी मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई से शुरू होकर 21 अगस्त तक चलेगा। संसदीय मामलों के मंत्री किरेन रिजीजू ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा-राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सरकार के इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है कि संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई से 21 अगस्त, 2025 तक आयोजित किया जाए। स्वतंत्रता दिवस समारोह के मद्देनजर 13 और 14 अगस्त को संसद की कोई बैठक नहीं होगी। पहले यह सत्र 12 अगस्त को समाप्त होने वाला था, लेकिन अब इसे एक सप्ताह के लिए बढ़ा दिया गया है। आगामी मानसून सत्र ऑपरेशन सिंदूर के बाद का सत्र होगा।

उज्जैन। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल ने गुरूवार को उज्जैन पहुंचकर बाबा महाकाल के दर्शन-पूजन कर प्रदेशवासियों के सुख एवं समृद्धि की कामना की है। इस दौरान प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद, प्रदेश शासन के मंत्री श्री गौतम टेटवाल, सांसद श्री उमेशनाथ महाराज, पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री जीतू जिराती, प्रदेश सह कोषाध्यक्ष व विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, सांसद श्री अनिल फिरोजिया, महापौर श्री मुकेश टटवाल, उज्जैन जिला अध्यक्ष श्री संजय अग्रवाल एवं ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री राजेश धाकड़ उपस्थित रहे।

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

मैं देखता हूँ
हर साथी की मुस्कुराहट के पीछे
एक संभावित विरोधी का चेहरा

फिर ठहर कर सोचता हूँ
क्या उसमें सामर्थ्य है
मेरा विरोधी बनने का

क्या मैं सराहूँगा
उसके प्रेम ही नहीं
द्वेष की भी भाषा

क्या मैं स्वीकारूँगा
उसके लगाव की तरह
उसके क्रोध की तीव्रता

उसका अनुराग
एक कच्ची ज़मीन है
अगर वह मेरे ख़िलाफ़
ईमान से नहीं लड़ सकता

अगर वो मेरा
अच्छा विरोधी नहीं
तो अच्छा साथी भी नहीं हो सकता।

– तनुज मिश्रा

उन्नत फाउंडेशन बीज के नाम पर प्रायवेट बीज कंपनियों की संभाग में खुली लूट

कृषि विभाग के कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से किसान हो रहे कंगाल

(राजेंद्र शर्मा)

इंदौर। संभाग के सभी जिलों में शासन को भेजी जाने वाली कृषि अधिकारियों की प्रोग्रेसिव ग्राउंड रिपोर्ट के विपरीत वस्तुस्थिति चौंकाने वाली हैं। पेस्टीसाइड, खाद बीज माफियाओं और इनके दलालों द्वारा संगठित होकर कृषि अधिकारियों की मिलीभगत से किसानों को विक्रय किया गया अमानक पेस्टीसाइड,खाद और अमानक बीज से कृषि उत्पादन और किसानों की जीविका संकट में होने का धार एवं इंदौर में एक मामला सामने आया है।

विगत दिनों भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि वैज्ञानिकों, सोया उत्पादक राज्यों के वरिष्ठ अधिकारियों,केंद्रीय कृषि सचिवों,किसानों और सोया उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ संवाद कार्यक्रम में कहा कि व्यापक सोयाबीन उत्पादन में किसानों को होने वाली समस्याओं में विशेषकर प्रायवेट कंपनियों से खरीदा अमानक प्रेस्टीसाइड, खाद और बीज के खराब होने या अंकुरण नहीं होने की स्थिति में किसान हमारे कृषि अधिकारियों से शिकायत करे तथा मुझे बताए हम ऐसे व्यापारियों पर सख्त कार्यवाही करेंगे। गौरतलब है कि वहां इंदौर संभाग के सभी आलाधिकारी उपस्थित थे।

क्या है मामला

कृषक भवरसिंह पिता रतन सिंह निवासी औरंगपुरा तहसील देपालपुर ने अपनी कृषिभूमि में सोयाबीन बोनी के लिए प्रायवेट बीज कंपनी ग्रीन गोल्ड एग्रीटेक,(1) 101 हिम्मतदगढ़ , धार रोड जिला इंदौर से उन्नत किस्म का कृषि विभाग द्वारा प्रमाणित फाउंडेशन 1, सोयाबीन बीज 4 बीघा खेत के लिए 30,30 किलो के 3 बैग कुल वजन 90 किलो 7500/रु प्रति क्विंटल की दर से खरीदा जिसका बिल क्रमांक 3317 एनके पुत्र सुनील ठाकुर के नाम से दिया गया।

दिलचस्प बात ये कि जो सोयाबीन का बीज दिया गया वो ग्रीन गोल्ड कंपनी का नहीं होकर श्री केशव सीड्स एंड कंपनी ग्राम सुन्दरेल, धामनोद जिला धार का था। 30/30 किलो के 3 बैग पर तीन टैग लगे थे जिनके नम्बर 270308,270334,270336 और शुद्धता 98 प्रतिशत, अंकुरण क्षमता 70 प्रतिशत छपा हुआ देख कर किसान पुत्र ने बीज लेने से मना कर दिया बावजूद कंपनी मालिक प्रकाश जैन ने अंकुरण की गारंटी लेते हुए उक्त बीज दे दिया जो बोनी के बाद अंकुरण नहीं हुआ।

बीज नहीं उगने की दशा में किसान ने ग्रीन गोल्ड कंपनी के प्रकाश जैन और श्री केशव सीड्स एंड कंपनी के पाटीदार से बात की जिस पर दोनों ने पल्ला झाड़ लिया किसान ने इसकी शिकायत आगे करने को कहा इस पर दोनों कंपनी मालिकों ने किसान को दो टूक कहा कि तुम से जो बन पड़े करके देख लो सभी अधिकारी हमारी जेब में है।

किसान ने फोन से जिला और ब्लॉक स्तर के कृषि अधिकारियों को अपनी आप बीती सुनाई तब अधिकारियों का जवाब सुनकर किसान के पैरों तले की जमीन खिसक गई और हकीकत में अधिकारियों को जेब में रखने वाली कंपनी मालिकों की बात सच साबित हुई।

मामला दबाने में अधिकारी हुए लामबंद

परेशान किसान ने तीन दिन बाद ग्रीन गोल्ड एग्री टेक (1) और श्री केशव सीड्स एंड कंपनी की लिखित शिकायत कलेक्टर और संयुक्त संचालक कृषि सहित अनेक आलाधिकारियों से की है।

शिकायत के बाद संयुक्त संचालक ने किसान को कार्यवाही का आश्वासन देते हुए अधीनस्थ अधिकारियों को 3दिन में जांच कर दोनों कंपनी के विरुद्ध मालिकों पर एफ आई आर दर्ज कर कंपनी सील करने के लिए हड़काया। शिकायत के बाद कुछ कृषि अधिकारी कंपनी के क्षेत्रीय दलालों के साथ मिलकर किसान को शिकायत वापस लेने एवं हर्जाने की शर्त पर समझौता करने के लिए दबाव बनाने का भर चक प्रयास के लिए लामबंद हो गए हैं।

बीज कंपनियों के अमानक बीज की जांच

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान के वैज्ञानिकों के अनुसार सोयाबीन बीज की नवीन किस्म तैयार करने में लगभग 20वर्षों की मेहनत लगती हे तब न्यू क्लियर किस्म बनती हे ,एसके बाद फाउंडेशन एफ 1 और एफ 2 तैयार होती है जिसे कृषि विभाग के नियंत्रण में प्रायवेट फार्म्स एवं किसानों को प्रोग्राम हेतु दिया जाता है, एसके पश्चात वो कृषिविभाग के बीज प्रमाणीकरण विभाग द्वारा प्रमाणित सर्टिफाइड किस्म सी 1 और सी 2 कहलाती हैं।वर्तमान में कुछ सीड्स कंपनिया बहुमूल्य फाउंडेशन और सर्टिफाइड बीज के नाम पर लोकल मार्केट से 4000/रु प्रति किवंटल के बीज को खरीद कर कृषिविभाग के तथाकथित भ्रष्ट अधिकारियों से बड़ा लेनदेन कर उस लोकल बीज पर विभाग का प्रमाणित टैग लगा 8000/रु प्रति किवंटल की दर से किसानों को बेच कर अच्छा मुनाफा अर्जित कर रहे हैं।पूर्व में कृषि विभाग के ईमानदार अधिकारयों द्वारा जांच अंतर्गत टेस्टिंग रिपोर्ट की जांच करने पर ये खुलासे हुए और सागर सीड्स जैसी कंपनी के मालिक जेल भी गए और कंपनी बंद हो गई ।

कथन

इस मामले में तीन दिन में जांच होने के पश्चात एनके विरुद्ध एफआईआर करवाने के साथ कंपनी को सील लगाकर सख्त कार्यवाही करेंगे।

– आलोक मीणा, संयुक्त संचालक कृषि, इंदौर

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 04 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

मादा को रिझाने के लिए बनाता है झोपड़ी, देता है रंग-बिरंगे तोहफे

● ये है दुनिया का सबसे रोमांटिक बर्ड, इजहार का तरीका भी गजब

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंसानों की ही तरह प्रकृति में और भी कई जीव-जंतु हैं, जो अनोखे तरीकों से अपना प्यार और आकर्षण दिखाते हैं। लेकिन इन सभी में बोवरबर्ड को दुनिया का सबसे रोमांटिक पक्षी माना जाता है। यह पक्षी न केवल अपनी मादा को रिझाने के लिए खूबसूरत झोपड़ियां बनाता है, बल्कि उसे तोहफे भी देता है। यहां तक कि वह मादा का दिल जीतने के लिए अनोखा डांस करने की कोशिश भी करता है। जी हां, आपने बिल्कुल सही पढ़ा है। ये पक्षी अपनी मादा का दिल जीतने के लिए इतनी मेहनत करता है। इस पक्षी का प्यार दिखाने के तरीकों के सामने तो अच्छे-अच्छे शर्मा जाते हैं। बोवरबर्ड ऑस्ट्रेलिया, न्यू गिनी और आसपास के द्वीपों में पाया जाने वाला एक मध्यम आकार का पक्षी है। इसकी लगभग 20 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से ज्यादातर नर अपनी मादा को आकर्षित करने के लिए एक खास प्रकार की झोपड़ी बनाते हैं, जिसे बावर कहा जाता है। यह झोपड़ी न सिर्फ उनका घर होती है, बल्कि मादा को रिझाने का एक जरिया भी है।

मादा के लिए बनाते हैं घर, देते हैं कई गिफ्ट्स-बोवरबर्ड का सबसे खास गुण है उसकी बावर बनाने की कला। नर बोवरबर्ड टहनियों, पत्तियों और घास से एक छोटी सी झोपड़ी तैयार करता है, जिसे वह सजाता भी है। यह पक्षी अपनी बावर को चमकीली वस्तुओं जैसे कि रंगीन पत्थर, फूल, सीपियां, बोतल के ढक्कन, कांच के टुकड़े और यहां तक कि सिक्कों से भी सजाता है। कुछ बोवरबर्ड तो नीले रंग की वस्तुओं को ज्यादा

पसंद करते हैं और उन्हें ही इकट्ठा करते हैं। इस झोपड़ी को बनाने में नर बोवरबर्ड को कई हफ्तों तक मेहनत करनी पड़ती है। वह अपनी बावर को लगातार सुधारता रहता है और अगर कोई दूसरा नर उसे नष्ट कर दे, तो वह फिर से नई बावर बनाने लगता है। बोवरबर्ड के लिए सिर्फ बावर बनाना ही काफी नहीं होता। वह अपनी मादा को आकर्षित करने के लिए तोहफे भी इकट्ठा करता है। वह जामुन, कीड़े और चमकदार वस्तुएं मादा के लिए लाता है। कुछ प्रजातियां तो मादा को 'गिफ्ट प्रेजेंटेशन' देती हैं, जहां वह अपने तोहफों को सजाकर रखता है। इसके अलावा, नर बोवरबर्ड मादा के सामने नृत्य करता है। वह अपने पंख फड़फड़ाता है, सिर हिलाता है और कभी-कभी दूसरे पक्षियों की आवाजों की नकल भी उतारता है।

केजरीवाल का गुजरात में ऐलान, बिहार में अकेले लड़ेगी एएपी

● अब कांग्रेस से गठबंधन नहीं

अहमदाबाद (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी बिहार में अकेले चुनाव लड़ेगी। पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को अहमदाबाद में कहा, इंडिया गठबंधन सिर्फ लोकसभा चुनाव के लिए था। अब हमारा किसी से कोई गठबंधन नहीं है।

केजरीवाल गुजरात के दो दिन के दौरे पर अहमदाबाद पहुंचे। यहां उन्होंने पार्टी के सदस्यता अभियान की शुरुआत की। केजरीवाल ने कहा कि गुजरात के विसावदर उपचुनाव में हमने कांग्रेस से अलग लड़कर तीन गुना ज्यादा वोटों से जीत दर्ज की है। उन्होंने कहा, यह जनता का सीधा संदेश है कि अब विकल्प आम आदमी पार्टी है। आगे गुजरात में चुनाव लड़ेंगे और जीतेंगे। दिल्ली में हार पर कहा कि ऊपर-नीचे होता रहेगा।

छात्रा ने सीएम से कहा- सेक्शुअल हरासमेंट पर हो बहस

सरकार सिर्फ विकसित भारत या आपातकाल जैसे मुद्दे चुनती है, दोषियों को सजा नहीं मिल रही

भोपाल (नप्र)। भोपाल में आयोजित मॉक पार्लियामेंट में एक छात्रा ने सीएम डॉ. मोहन यादव से कहा- सरकार विकसित भारत या आपातकाल जैसे मुद्दे चुनती है, लेकिन सेक्शुअल हरासमेंट जैसे जरूरी मुद्दों पर कभी चर्चा नहीं होती। बहुत सारी बातें दबाई जाती हैं। सेक्शुअल हरासमेंट जैसे मामलों में लोगों को सजा भी नहीं मिल रही। इस पर भी मॉक पार्लियामेंट में डिबेट होनी चाहिए। छात्रा छाया बिलगैंया ने गुरुवार को बीजेपी महिला मोर्चा की ओर से आयोजित मॉक पार्लियामेंट में विपक्ष की भूमिका में रहते हुए ये बातें कही।

सीएम का जवाब- एमपी पहला राज्य जिसने फांसी का प्रावधान किया- मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा, भोपाल में ही एक घटना में हमारी पुलिस ने बहुत तेजी से काम किया और आरोपी को फांसी की सजा दिलवाई। मध्यप्रदेश पहला राज्य है जिसने ऐसे मामलों में फांसी का प्रावधान किया। हमारी सरकार ऐसे अपराधियों को किसी हाल में नहीं बख्शेगी। इस बीच सीएम ने पूछा- कौन सा जिला जहां एसपी और कलेक्टर दोनों महिलाएं हैं? छात्राओं ने जवाब में नरसिंहपुर बताया। सीएम ने उनके जवाब को सही बताते हुए कहा- शहडोल संभाग में तो संभागायुक्त भी महिला हैं।

हमारी सरकार ने बहनों को सम्मान दिया- सीएम ने कहा, हमारी संस्कृति में महिलाओं को हमेशा सम्मान मिला है। हमारी सरकार भी इसी भावना से काम कर रही है। हमने महिलाओं को प्रशासन के बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया है। महिला मोर्चा के मॉक पार्लियामेंट कार्यक्रम में सीएम डॉ. मोहन यादव के अलावा बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष

वीडी शर्मा, केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, पूर्व केंद्रीय मंत्री भारती पवार, मंत्री कृष्णा गौर, मेयर मालती राय, भिंड सांसद संध्या राय, पीपुल्स ग्रुप के डायरेक्टर मयंक विश्नोई मौजूद थे।

कांग्रेस ऐसी गरीब पार्टी जिसे कोई भारतीय नाम नहीं मिला- सीएम ने भाजपा द्वारा महिलाओं को दिए गए सम्मान का जिक्र करते हुए कांग्रेस पर निशाना साधा। सीएम ने कहा- आप कभी कल्पना करते हैं कि कांग्रेस पार्टी ने कांग्रेस नाम क्यों रखा? ये ऐसी गरीब पार्टी जिसको कोई भारतीय नाम ही नहीं मिला। आपके भाई बहन पैदा होते तो आप क्या अमेरिका, इंग्लैंड के बच्चों की तरह नाम रखते हो क्या? उनके नाम रख रहे हो तो वहां जाकर चुनाव लड़ो। वहां जाकर काम करो।

सीएम ने राहुल गांधी पर निशाना साधा- सीएम ने पूछा- पूरी पार्लियामेंट में हमारा शुभ वस्त्र क्या है? भाई का या बहन का?

एक छात्रा ने कहा- कुर्ता पजामा और साड़ी - सीएम बोले- ये भैया तो टीशर्ट में ही घूमता रहता है। पता नहीं कहां की बुद्धि लेकर आए। क्या बोलते हैं खुद को ही मालूम नहीं। किसको बोलते हैं ये भी मालूम नहीं।

अटल जी ने 50 साल तक विपक्ष के नेता की दमदारी से भूमिका निभाई- सीएम ने पूछा- अटल जी कितने साल नेता प्रतिपक्ष रहे? जवाब में देरी हुई तो सीएम बोले चैटजीपीटी खोल लो।

सीएम ने कहा- अटल जी विदेश मंत्री बनने के पहले 50 साल तक विपक्ष में रहे। कई प्रधानमंत्री आए-गए लेकिन दमदारी से अपनी भूमिका अदा की। नेता प्रतिपक्ष जैसे पद को गौरवांवित किया। जब बांग्लादेश से युद्ध का मौका आया तो अपनी प्रधानमंत्री की तारीफ करते हुए बहनों की संज्ञा दी साक्षात दुर्गा कहा- ये दुर्गा से संबंध जोड़कर हमारी पार्टी माता-बहनों को देवी के रूप में देखती है। साक्षात दुर्गा कहकर सीमा पर लड़ने वाले जवानों का हौसला अफजाई की। देश का मनोबल बनाए रखा। संघर्ष की बात आई तो आपातकाल के दौरान कविता लिखी- आओ फिर से दीया, बुझी हुई बाती सुलगाएं।

भारत और पाकिस्तान के बीच तेज हुई पानी की जंग

● हकीकत में बदलने वाला है शहबाज का डर, भारी पड़ गया इंडिया से पंगा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। सिंधु जल संधि को स्थगित किए जाने के भारत के फैसले के बाद से ही पाकिस्तान बौखलाया हुआ है। इस बीच भारत ने एक और ऐसा फैसला किया है जो पाकिस्तान की नींद उड़ाने वाला है। भारत ने जम्मू-कश्मीर में तुलबुल नेविगेशन प्रोजेक्ट को फिर से पुनर्जीवित करने का फैसला किया है। अप्रैल में सिंधु जल संधि को स्थगित किए जाने के बाद यह भारत का पहला बड़ा कदम है। पीटीआई की एक रिपोर्ट के अनुसार, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का काम शुरू हो गया है। भारत ने यह फैसला लेकर साफ कर दिया है कि सिंधु जल संधि को स्थगित किए जाने का फैसला केवल दिखाने के लिए

नहीं है, बल्कि पाकिस्तान के खिलाफ नई दिल्ली के पास पूरी प्लानिंग तैयार है। तुलबुल नेविगेशन प्रोजेक्ट को जेके के सोपोर में झेलम नदी पर एक भंडारण सुविधा स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया था।

मुंबई पुलिस हाईकोर्ट से बोली-दिशा सालियान ने किया सुसाइड

● हत्या-यौन उत्पीड़न का सबूत नहीं, संजय राउत ने फणनवीस को घेरा

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई पुलिस ने बॉम्बे हाईकोर्ट को बताया कि अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियान ने आत्महत्या की थी। उनकी मौत में कोई साजिश नहीं मिली है।

हाईकोर्ट में दाखिल पुलिस के इस एफिडेविट की बात गुरुवार को सामने आई। इसके बाद शिवसेना (उद्धव गुट) के सांसद संजय राउत ने कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और अन्य महायुति नेताओं को इस मामले में आदित्य ठाकरे से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने जबरन आदित्य पर आरोप लगाए।

अफ्रीकी देश माली में तीन भारतीयों का अपहरण

● अल कायदा ने किया अगवा, भारत की चेतावनी-तुरंत छोड़ो

नई दिल्ली (एजेंसी)। माली में तीन भारतीय नागरिकों के अगवा किए जाने की खबर है। भारत सरकार ने इस घटना पर गहरी चिंता जताई और माली सरकार से अपहृत भारतीयों की सुरक्षित और जल्द रिहाई के लिए हरसंभव कदम उठाने की मांग की। आशंका जताई जा रही है कि इस घटना में अल-कायदा का हाथ हो सकता है।

हालांकि किसी संगठन ने अब तक इसकी जिम्मेदारी नहीं ली है। यह घटना माली के कायस शहर में डायमंड सीमेंट फैक्ट्री में हुई। इस फैक्ट्री में सशस्त्र हमलावरों ने धावा बोलकर तीन भारतीयों को बंधक बना लिया है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह हमला 1 जुलाई को हुआ, जब हथियारबंद आतंकियों ने हमला किया।

गुजरात से यूपी-हिमाचल तक भारी बारिश से 'तांडव'

● बनासकांठा में हर ओर 'जल' जला, घरों में घुसा पानी ● यूपी के वाराणसी में हाईवे का 20 फीट हिस्सा धंस गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के ज्यादातर राज्यों में गुरुवार को भी तेज बारिश का दौर जारी है। हिमाचल में बाढ़-बारिश से हालात खराब हैं। अब तक मंडी में बारिश से जुड़ी घटनाओं में 11 की मौत हो चुकी है। उधर, गुजरात के बनासकांठा में पिछले 24 घंटों में 8 इंच बारिश हुई। इससे कई इलाकों में पानी भर गया। उत्तराखंड में कई जगहों पर लैंडस्लाइड हुई। पहाड़ों का मलबा सड़कों पर आ गया। हिमाचल के मंडी जिले में बादल फटने और बाढ़ से मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई है। अब भी 34 लोग लापता हैं। इधर, राज्य में इस मानसून में मरने वालों का आंकड़ा 52 से ज्यादा हो गया है। खराब मौसम के चलते राहत कार्य में दिक्कत आ सकती है, क्योंकि मौसम विभाग ने कई जिलों में बाढ़ का अलर्ट जारी किया है। राज्य में भारी बारिश के कारण 245 सड़कें बंद हैं।

यूपी में अवैध खनन पर योगी सरकार की एयर स्ट्राइक

एआई और ड्रोन से कसी जा रही नकेल, जीपीएस से ट्रैकिंग

लखनऊ (एजेंसी)। योगी सरकार ने प्रदेश में अवैध खनन, परिवहन और भंडारण पर रोकथाम के लिए अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। प्रदेश में 57

एआई और जीपीएस आधारित चेकगेट्स स्थापित किए गए हैं, जो खनन में शामिल वाहनों की कड़ी निगरानी कर रहे हैं। इन चेकगेट्स पर परिवहन विभाग के सहयोग से वेट-इन-मोशन तकनीक का उपयोग कर ओवरलोडिंग पर अंकुश लगाया जा रहा है। अब तक 21,477 वाहनों को अवैध परिवहन के लिए ब्लैक लिस्टेड किया गया है। इसके अतिरिक्त, भूतत्व एवं खनिकर्म विभाग डेटा के माध्यम से अवैध खनन की पहचान कर रहा।

बिहार में शादी के एक महीने बाद पति का मर्डर

● मंडप में ही की प्लानिंग, झारखंड से बुलाए शूटर ● 60 साल के सगे फूफा से था लड़की का अफेयर

औरंगाबाद (एजेंसी)। इंदौर की सोनम ने जैसे अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या करवाई वैसा ही मामला बिहार के औरंगाबाद से सामने आया है। जहां 60 साल के फूफा के प्यार में 27 साल की भतीजी ने अपने पति की हत्या करवा दी। 24 जून को 27 साल के प्रियांशु उर्फ छोटू की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। 21 मई को प्रियांशु और गुंजा की शादी हुई थी। शादी के मंडप में ही लड़की ने पति के मर्डर की प्लानिंग की। शादी के करीब 1 महीने बाद ही

पत्नी ने शूटर हायर कर के पति का मर्डर करवा दिया। 2 जुलाई को पुलिस ने आरोपी पत्नी को गिरफ्तार किया है। फूफा जीवन सिंह फरार है। दोनों ने हत्या के लिए झारखंड से 2 शूटर हायर किए। पुलिस ने दोनों शूटर्स जयशंकर चौबे और मुकेश शर्मा को भी गिरफ्तार कर लिया है। गुंजा ने पुलिस को बताया, मैं बचपन से ही अपने फूफा के घर रहती थी। वहीं पढ़ती थी। इसी दौरान मैं उनके करीब आ गई। हम दोनों एक दूसरे से प्यार करने लगे। मुझे पता था कि वो उम्र में मुझसे डबल हैं, लेकिन प्यार तो प्यार है। उम्र नहीं देखता। बुआ को कभी हमारे रिश्ते को लेकर शक नहीं हुआ। हम घर में ही मिला करते थे। अप्रैल में बुआ ने हमें एक साथ देख लिया। बात घर में फैल गई।

कोलकाता गैंगरेप: हाईकोर्ट का पारा 'हाई', राज्य सरकार से मांगी रिपोर्ट

● बार काउंसिल ने मनोजित मिश्रा की मेंबरशिप की रद्द ● कोलकाता पुलिस बोली-तीनों ही आरोपी कर रहे गुमराह

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता हाईकोर्ट ने कसबा कॉलेज में गैंगरेप को लेकर दाखिल की गई तीन जनहित याचिकाओं पर सुनवाई की। इस दौरान सुनवाई करते हुए कोर्ट ने राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी है। वहीं, पश्चिम बंगाल बार काउंसिल ने बुधवार को मुख्य आरोपी मनोजित मिश्रा की मेंबरशिप रद्द कर दी और उनका नाम वकीलों की सूची से हटा दिया। बार काउंसिल के चेयरमैन अशोक देब ने बताया कि गंभीर और अमानवीय अपराध के आरोपों के चलते मनोजित मिश्रा का नाम बार काउंसिल की सूची से हटाया गया है। वहीं, पुलिस ने बताया कि तीनों आरोपी अलग-अलग बयान दे रहे हैं ताकि जांच को भटकाया जा सके। एक अधिकारी ने कहा कि तीनों लॉ स्टूडेंट हैं, इन्हें कुछ कानूनी चालें आती हैं। साथ ही पुलिस यह पता लगाने की कोशिश भी कर रही है कि मनोजित, जैब अहमद और प्रमीत मुखर्जी अपनी गिरफ्तारी से कुछ घंटे पहले किन-किन लोगों से मिले थे या किन लोगों के संपर्क में थे। पुलिस ने कॉलेज की वाइस-

प्रिंसिपल डॉ. नयना चटर्जी से भी दो बार पूछताछ की है। मनोजित मिश्रा ने उनसे 26 जून की सुबह फोन पर बात की थी। बुधवार को पुलिस ने उन 16 लोगों से भी पूछताछ की, जो घटना के वक्त कॉलेज परिसर में मौजूद थे। पुलिस को सुरक्षा गार्ड के कमरे से जब्त एक चादर पर एक दाग मिला है, और यह जांच की जा रही है कि उसका इस घटना से कोई संबंध है या नहीं। इस बीच, कोलकाता पुलिस के डिटेक्टिव डिपार्टमेंट ने बुधवार को इस केस की जांच अपने हाथ में ले ली है। अब तक एसआईटी जांच कर रही थी। मनोजीत की बैचमेट रही एक लड़की ने कॉलेज में उसके आतंक के बारे में बताया है। लड़की के मुताबिक, कॉलेज में लौटने के बाद मनोजीत ने सब कुछ कंट्रोल करना शुरू कर दिया था। मनोजीत से बचने के लिए ही उसने भी कॉलेज जाना छोड़ दिया था। दरअसल, मनोजीत ने 2022 में कॉलेज से ग्रेजुएशन कम्प्लीट किया था। 2 साल बाद 2024 में वह एडहॉक पर नौकरी शुरू की। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, उस समय कॉलेज में एडमिशन रेट घट गया था। इतना ही नहीं, कुछ लड़कियों ने बताया कि मनोजीत की मौजूदगी में उन्हें डर बना रहता था। वह कैंपस में लड़कियों तस्वीरें लेता, ग्रुप में पोस्ट करता था।

विदिशा के आशीष का चयन पीआईबी के लिए

भोपाल (नप्र)। विदिशा जिले के ग्राम बदनपुर निवासी आशीष विश्वकर्मा का चयन भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय सूचना सेवा (ग्रुप- बी) में हुआ है। उन्हें प्रेस इनफॉर्मेशन ब्यूरो के दिल्ली मुख्यालय में नियुक्ति मिली है।

आशीष माखनलाल पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र है। वह पेशे से पत्रकार और राजनीतिक सलाहकार रहे हैं। उन्होंने देश के मीडिया संस्थानों संपादकीय विभागों में काम किया है। पत्रकारिता छोड़ने के बाद वह राजनीतिक सलाहकार के तौर पर काम कर रहे थे।

उन्होंने आगे बताया कि कोविड के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं का ट्रेंड बदला है। अधिकतर युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तरफ रूख कर रहे हैं, इस कारण कटऑफ लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में चयन होने पर उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त की।

प्रदेश की पिछड़े वर्ग की जातियों को केन्द्र की सूची में शामिल करने जनसुनवाई आज

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग करेगा जनसुनवाई

भोपाल (नप्र)। प्रदेश की पिछड़े वर्ग की जातियों को केन्द्र की सूची में शामिल करने 4 जुलाई को पूर्वान्ह 11 बजे से व्हीआईपी स्टेट गेस्ट हाउस लालघाटी के सभागार में जनसुनवाई होगी। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष श्री हंसराज गंगाराम अहीर, सदस्य श्री भुवन भूषण कमल जनसुनवाई करेंगे। इस अवसर पर राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया एवं सदस्य श्री सीताराम यादव उपस्थित रहेंगे।

राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सचिव श्री देवेश कुमार मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग नई दिल्ली द्वारा मध्यप्रदेश राज्य की पिछड़ा वर्ग की 32 जातियों, दवेज, भोपा मनभाव, दमामी, हरिदास, कोहरी, फूलमाली (फूलमारी), कलार, जायसवाल, डउसेना, लोढ़ा (तंवर), गोलान, गौलान, गवलान, जादम, कुडमी, रूआला / रूहेला, अब्बासी के साथ सक्का, घोषी गवली और गोली है। इनके अतिरिक्त लिंगायत, महाकुल (राउत), थारवार, जमना लोधी, मनधाव डूकर, कोल्हाटी, घड़वा, झारिया, वोवरिया, मोवार, रजवार, सुत सारथी, तेलंगा, तिलंगा, गयार / परधनिया, बया महरा / कौशल, वया थोरिया, खरादी, कमलीगर, संतराम, शेख मेहतर को केन्द्रीय पिछड़ा वर्ग सूची में सम्मिलित करने के संबंध में जनसुनवाई आयोजित की गई है।

करेहधाम दर्शन करने गया युवक नदी में डूबा

मुरैना (नप्र)। मुरैना के उरेहरा गांव निवासी दिनेश बंसल (22) की नदी में डूबने से मौत हो गई। दो दिन की तलाश के बाद गुरुवार को एसडीआरएफ की टीम ने शव बरामद किया। दिनेश अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। दिनेश अपने दोस्तों के साथ धार्मिक यात्रा पर करेह धाम दर्शन के लिए गया था। दर्शन के बाद वह खनेता गांव के पास बहने वाली आसन नदी के किनारे शौच के लिए गया, जहां पैर फिसलने से नदी में गिरकर डूब गया। सूचना मिलने पर पुलिस और एसडीआरएफ की टीम ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया, लेकिन पहले दिन कोई सफलता नहीं मिली।

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने गुरुवार को प्रातः मैहर में मां शारदा देवी के दर्शन कर पूजा अर्चना की। उन्होंने मां शारदा से प्रदेश वासियों के सुख समृद्धि के लिए कामना की।

हैनीमैन की 181वीं पुण्य तिथि पर संकल्प वृद्ध आश्रम निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगा

भोपाल। होम्योपैथिक चिकित्सक संघ द्वारा आज दिनांक 02/07/25 को होम्योपैथी के जनक डॉ. सैमुअल हैनीमैन जी की 181वीं पुण्य तिथि पर संकल्प वृद्ध आश्रम, संकल्प नशा मुक्ति केंद्र, अवधपुरी, भोपाल मैं निःशुलक चिकित्सा शिविर का अयोजन किया गया जहां उपस्थित बहुत से वृद्धजनों और नशे की लत में भटके हुए युवाओं का होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से उपचार किया गया और स्वस्थ जीवन शैली को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया

जिस में मुख्य रूप से उपस्थित भोपाल होम्योपैथिक चिकित्सक संघ के संस्थापक डॉ. डी.एस.चंदेल जी, अध्यक्ष डॉ. शशि जोशी जी, निदेशक श्री राहुल सिंह, श्रीमती निशा सिंह एवं नशामुक्ति परामर्शदाता श्री सर्वेश निगम (संकल्प वृद्ध आश्रम, संकल्प नशा मुक्ति केंद्र, अवधपुरी, भोपाल) सुमन मुस्कान फाउंडेशन का सराहनीय योगदान रहा।

डॉ. सुषमा पाटिल, डॉ. रत्नमाला शर्मा, डॉ. शिवांगी नायक, डॉ. सुदीप शाह, डॉ. अनिरुद्ध मोरे और अन्य चिकित्साक उपस्थित रहे।

कमरे का दरवाजा बंद होता तो नहीं होती वारदात

मुरैना में सरपंच के घर सवा करोड़ की डकैती, पति ने सुनाई आपबीती, डीआईजी ने किया दौरा

मुरैना (नप्र)। मुरैना के जौरा के अलापुर गांव में सरपंच मंजू यादव के घर हुई डकैती के मामले में पुलिस ने संदेही आसाराम कुशवाहा को गिरफ्तार किया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए आईजी सचिन कुमार अतुलकर, डीआईजी और एसपी ने बुधवार रात सरपंच के घर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। आईजी ने परिवार से बातचीत की और एसपी समीर सौरभ को जल्द से जल्द सभी आरोपियों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए हैं।

सरपंच पति और भाजपा नेता राजकुमार यादव मीडिया को बताया कि रात करीब 1:20 बजे की घटना है। मैं कमरे का दरवाजा खुला रखकर सोता हूं। अगर यह आदत नहीं होती तो शायद इस वारदात से बच जाता। डकैतों ने सोची-समझी साजिश के तहत न केवल घर के सभी कमरों की कुंडियां बल्कि पड़ोसियों के दरवाजे भी बाहर से बंद कर दिए, ताकि कोई मदद के लिए न पहुंच सके। उन्होंने यादव की बंदूक के साथ-साथ उनके कमरे में रखी बदन सिंह गुर्जर की राइफल भी ले ली। रात में आवाज सुनकर मैंने अपने छोटे बेटे करुआ को आवाज दी। जवाब नहीं मिला तो मैं मोबाइल लेकर बैठा ही था कि बदमाशों ने मुझे धक्का देकर मुंह पर कट्टा तान दिया। जब उन्होंने प्रतिरोध करने की कोशिश की तो दो अन्य बदमाशों ने भी उन पर बंदूक तान दी और लोहे के पाइप से मारने की धमकी दी।

तीन आरोपी नामजद, एक गिरफ्तार- सरपंच मंजू यादव के घर हुई डकैती के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी आसाराम कुशवाहा को गिरफ्तार कर लिया है। एफआईआर में नामजद दो अन्य आरोपी छुट्टन कुशवाहा और केके कुशवाहा और एक अज्ञात की तलाश जारी है।

पुलिस के अनुसार, आरोपी आसाराम का मकान सरपंच के घर वाली सड़क पर पुलिया स्थित पेट्रोल पंप के बगल में है। आरोपी अंतरराज्यीय स्तर के बदमाश रहे हैं। पुलिस ने मामले में तेजी दिखाते हुए फरार आरोपियों के रिश्तेदारों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। जांच में कई अहम जानकारियां सामने आने की उम्मीद है।

लाखों के जेवर, हथियार और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण ले गए- शिकायत के मुताबिक बदमाश सोने की करधनी, सीतारामी, दो हार (एक छोटा और एक बड़ा), कानों के टॉप्स, दो जोड़ी कुंडल, छह अंगूठियां और 40 सोने के मोती ले गए। इसके अलावा तीन बड़ी जंजीरें, जिनमें एक-एक तोले, ढाई तोले और तीन तोले की जंजीरें शामिल हैं।

कांग्रेस प्रवक्ता मिथुन अहिरवार बोले

बीजेपी डिजिटल ट्रैप की सरकार

भोपाल (नप्र)। भोपाल में मध्य प्रदेश कांग्रेस मीडिया अध्यक्ष मुकेश नायक और कांग्रेस प्रवक्ता मिथुन अहिरवार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान मिथुन अहिरवार ने कहा कि बीजेपी डिजिटल इंडिया नहीं बल्कि डिजिटल ट्रैप की सरकार है। वह ऑनलाइन सट्टा, फर्जी लोन ऐप्स और डिजिटल ठगी को खुली छूट देकर अपनी सत्ता बचा रही है।

अहिरवार बोले- सरकार ने बलात्कारियों के आगे सरेंडर किया

कांग्रेस प्रवक्ता मिथुन अहिरवार ने कहा कि मध्य प्रदेश में रोज 20 बलात्कार हो रहे हैं। वहीं, प्रदेश के डीजीपी बयान दे रहे हैं कि बलात्कार रोकना अकेले पुलिस के बस की बात नहीं। अगर पुलिस के हाथ बंधे हैं तो क्या डीजीपी यह मान चुके हैं कि सरकार ने बलात्कारियों के आगे सरेंडर कर दिया है। उन्होंने कहा कि अगर समाज परफेक्ट हो जाएगा, तो फिर पुलिस की जरूरत ही क्यों होगी? प्रेस कॉन्फ्रेंस में बीजेपी के नए प्रदेश अध्यक्ष पर सवाल किए गए कि वो कोई जवाब देंगे या बंधे हाथों वाला डमी अध्यक्ष बनकर चुप रहेंगे।

अहिरवार बोले- बीजेपी के नए प्रदेश अध्यक्ष बंधे हाथ के अध्यक्ष

मिथुन अहिरवार ने भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल को बंधन हाथों वाला अध्यक्ष करार दिया। उन्होंने कहा कि इंदौर में एक युवक ने जुए के 50,000 रुपए के बदले पत्नी को दोस्तों के साथ संबंध बनाने पर मजबूर किया।

रायसेन में एक बैंक कर्मचारी अंकित चौरे ने ऑनलाइन गेमिंग से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। उज्जैन में पुलिस ने पिछले साल सटोरियों से 15 करोड़ रुपए और विदेशी करेंसी जब्त की थी। इस साल कोई बड़ी कार्रवाई नहीं हुई।

अगर इन गंभीर मुद्दों पर भी भाजपा अध्यक्ष मौन रहेंगे, तो क्या उन्हें केवल पोस्टिंग और ट्रांसफर मैनेजमेंट के लिए नियुक्त किया गया है। डिजिटल सट्टा और लोन ऐप्स पर सरकार चुप रहकर कमाई कर रही और लोगआत्महत्या।

कांग्रेस ने रखी ये मांगें

डीजीपी के बयान पर मुख्यमंत्री को सफाई देनी चाहिए कि यह निजी राय है या सरकार की नीति।

फर्जी लोन ऐप्स, डिजिटल ठगी और ऑनलाइन सट्टे पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई हो।

साइबर सेल को सशक्त कर सख्त कानून लागू हों।

विपिन फिर बोला- सोनम ने राजा की बलि दी

कहा- हत्या के बाद इंदौर आकर राज से शादी की होगी, दूसरा मंगलसूत्र उसी का

इंदौर (नप्र)। इंदौर के राजा रघुवंशी मर्डर केस में उसके भाई विपिन ने गुरुवार को बलि देने की बात दोहराई। विपिन ने कहा- सोनम ने शादी के पहले अपनी मां से कहा था कि उसकी पसंद की शादी नहीं हुई तो अंजाम बहुत बुरा होगा। और इस तरह सोनम ने शादी के बाद राजा को मारकर उसकी बलि देकर अपनी इच्छा तो पूरी कर ली है।

विपिन ने कहा, राजा को मारने के बाद जब सोनम इंदौर आई तो उसने राज से शादी कर ली होगी, इसलिए दूसरा मंगलसूत्र उसी का होगा। दो में से एक मंगलसूत्र हमारा दिया हुआ है। जबकि दूसरा हमने नहीं दिया। एक चेन और पायजेब भी बरामद की गई है, वो भी हमारी नहीं है।

बता दें कि बुधवार को राजा की मौसेरी बहन सृष्टि के खिलाफ असम में एफआईआर दर्ज करने की जानकारी आई थी। ये एफआईआर इंस्टाग्राम वीडियो में नरबलि की बात कहकर छवि बिगाड़ने के आरोप पर दर्ज कराई गई थी। इस मामले में विपिन ने कहा- 15 दिन पहले हमें असम पुलिस का नोटिस मिला था। इसमें कहा था कि नरबलि के सबूत हैं तो दें वरना माफी मांगें। इस पर हमने माफी मांग ली थी। एफआईआर जैसी कोई बात नहीं है।

मामले में कामाख्या मंदिर के पुजारी सरू डोलोई हिमाद्रि का बयान भी सामने आया था। उन्होंने कहा कि जब भी कामाख्या मंदिर के आसपास कोई हत्या का मामला होता है तो मंदिर में मानव बलि का मुद्दा उठाया जाता है। इस तरह के आरोपों से यहां के लोगों की भावनाएं भी आहत होती हैं। पुजारी का कहना है कि राजा की नरबलि का दावा धार्मिक भावनाएं भड़काने और क्षेत्रीय तनाव पैदा करने वाला है।

सृष्टि ने लेटर मिलने के बाद माफी मांगी थी- विपिन ने गुरुवार को बताया कि सृष्टि को असम सरकार की ओर से करीब 15 दिन पहले पत्र आया था। उसमें कहा गया था कि नरबलि को लेकर आपके पास कोई सबूत हो तो बता दीजिए। वरना अपने बयान पर माफी मांगिए। पत्र में कहा गया था कि आप केस को डायवर्ट कर रहे हो और धर्म को बीच में ला रहे हो। इसके बाद सृष्टि ने माफी मांग ली थी। हमने आशंका जाहिर की थी। इसके बाद हमने माफी मांग ली है। वहां अब बयान के लिए नहीं जाना है।

मां और भाई ने पहले भी जताई थी बलि की आशंका

राजा की मां उमा और भाई विपिन रघुवंशी ने भी 11 जून को नरबलि की आशंका जताई थी। उन्होंने कहा था कि आखिर सोनम राजा को लेकर शिलॉन्ग क्यों जाना चाहती थी? राजा की मां ने दावा किया था कि बेटे राजा पर तंत्र क्रिया की गई होगी। सोनम ने मेरे बेटे की नरबलि दे दी। हम सब पर भी सोनम ने वशीकरण किया था। जैसा वह लोग बोल रहे थे, हम वैसे ही चल रहे थे। अब हमें इसका एहसास हो रहा है।

परिजन ने आशंका जताई थी कि हो सकता है सोनम ने मन में नरबलि देने के लिए मनोकामना की हो क्योंकि कामाख्या देवी में पूजा करने के बाद आरोपियों ने राजा के गले पर वार किया था। जिस दिन राजा की हत्या हुई, उस दिन ग्यारस थी। राजा की मां ने दावा किया है कि इस हत्याकांड के पीछे 15 लोग हो सकते हैं।

बयान और वीडियो के बाद ट्रोल हो चुकी है सृष्टि

सृष्टि सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर है। वह अलग-अलग प्रतिष्ठानों के लिए विज्ञापन भी करती है। इसके चलते उसके बड़ी संख्या में फॉलोअर्स भी हैं। राजा के मेघालय में लापता होने के बाद से ही सृष्टि ने सोशल मीडिया पर कैंपेन शुरू किया था। वह लगातार वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर रही थी।

राजा की हत्या और सोनम के पकड़े जाने के बाद भी सृष्टि के कई वीडियो वायरल हुए। इसके चलते उसे काफी ट्रोल किया गया। यहां उसका जमकर विरोध हुआ। कहा गया कि सृष्टि यह सब वायरल होने के लिए कर रही है। हालांकि सृष्टि के समर्थन में भी कई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर आए थे।

सृष्टि बोली- भावुक होकर दिया बयान

राजा के लापता होने से लेकर शव बरामद होने तक सृष्टि सोशल मीडिया पर लगातार सक्रिय रही थी और मदद की गुहार लगाती रही। इसी दौरान उसने एक वीडियो में नरबलि जैसा बयान दिया, जो अब विवाद में आ गया है।

मामले के तूल पकड़ने के बाद सृष्टि ने सोशल मीडिया पर माफी मांगते हुए कहा कि उसने यह बयान भावुक होकर दिया था। उसका उद्देश्य किसी धर्म या समुदाय की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं था। सृष्टि के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा कि सृष्टि पहले ही सार्वजनिक रूप से माफी मांग चुकी है। अगर जरूरत पड़ी, तो वे असम जाकर भी अपनी बात स्पष्ट करेंगे।

सोनम और राजा की शादी 11 मई को इंदौर में हुई थी। वे 21 मई को हनीमून के लिए असम के गुवाहाटी से होते हुए मेघालय पहुंचे थे। 23 मई को पूर्वी खासी हिल्स जिले के सोहरा में नोंगरियाट गांव से लापता हो गए थे। राजा का क्षत-विक्षत शव 2 जून को वेइसाडोंग फॉल्स के पास एक घाटी में मिला था। सोनम 9 जून को क्के गाजीपुर में मिली थी।

एमपी में एक अक्टूबर से महंगा होगा टाइगर रिजर्व पर्यटन

दस प्रतिशत बढ़ जाएगी एंट्री फीस, विदेशियों को चुकानी होगी दोगुनी राशि

भोपाल (नप्र)। एमपी में नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व में घूमना एक अक्टूबर से महंगा हो जाएगा। सरकार ने मौजूदा प्रवेश टिकट फीस में दस फीसदी की बढ़ोतरी करने का फैसला किया है। विदेशी पर्यटकों को भारतीय पर्यटकों की बजाय दोगुनी टिकट फीस देनी होगी। प्रदेश के सभी राष्ट्रीय उद्यानों एवं बाघ अभयारण्यों में भ्रमण के लिए प्रवेश टिकट की बुकिंग एमपी ऑनलाइन के माध्यम से होती है।

प्रदेश के ज्यादातर टाइगर रिजर्व में सोमवार से शुक्रवार तक छह लोगों के प्रवेश पर 2400 रुपए और शनिवार-रविवार को 3000 रुपए प्रवेश शुल्क लिया जाता है। एक अक्टूबर से इसमें 10 प्रतिशत की वृद्धि हो जाएगी। इसके बाद पर्यटकों को क्रमशः 240 और 300 रुपए अधिक चुकाने पड़ेंगे। इसमें जिप्सी का किराया शामिल नहीं है। जिप्सी के लिए पर्यटकों को अलग-अलग पार्क में 2000 से 3500 रुपए तक अतिरिक्त देने पड़ते हैं। वहीं विदेशी पर्यटकों को दो गुना शुल्क चुकाना पड़ता है।

तीन माह बंद रहेंगे पार्क- मानसून के कारण प्रदेश के सभी संरक्षित क्षेत्रों में तीन माह (जुलाई से सितंबर) पर्यटन बंद रहेगी। इसके दो कारण हैं। पहला तो यह ब्रीडिंग सीजन है और दूसरा बारिश के कारण नदी-नालों में काफी पानी रहता है। बारिश के कारण जंगल के रास्ते भी खराब हो जाते हैं। ऐसे में पर्यटन कराना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए 1 जुलाई से 30 सितंबर तक सभी पार्क बंद कर दिए जाते हैं। यानी 1 अक्टूबर को इन पार्कों में फिर से पर्यटन शुरू होगा।

टिकट के दाम बढ़ाने ऐसे हुआ था फैसला

प्रदेश सरकार ने 22 अक्टूबर 2024 को एक अधिसूचना जारी की थी, जिसमें मैहर जिले के मुकुंदपुर वाइट टाइगर सफारी, भोपाल के वन विहार राष्ट्रीय उद्यान और इंदौर के रालामंडल अभयारण्य के प्रवेश शुल्क में 5 रुपए की बढ़ोतरी की गई थी। इसी अधिसूचना में यह भी प्रावधान किया गया था कि प्रदेश के सभी संरक्षित क्षेत्रों (नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व) के प्रवेश शुल्क में हर तीन साल में 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी। यह नीति 2025-26 से प्रभावी हो रही है। इसलिए एक अक्टूबर से सभी नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व में घूमना महंगा हो जाएगा।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका पदों के लिए 2.70 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त

आवेदन की अंतिम तिथि आज 4 जुलाई निर्धारित

भोपाल (नप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं आंगनवाड़ी सहायिका के रिक्त पदों की पूर्ति के लिये जारी की गई ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया को अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिल रही है। विभाग द्वारा 19 जून को जारी विज्ञापन के तहत कुल 19,504 पदों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है, जिसमें अब तक 2,70,152 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं।

भर्ती प्रक्रिया में दस संभागों से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के लिए 55,730 और आंगनवाड़ी सहायिका के लिए 2,14,422 आवेदन प्राप्त हुए हैं। आवेदन प्रक्रिया की अंतिम तिथि 4 जुलाई निर्धारित की गई है, जबकि भरे गए आवेदन में सुधार की अंतिम तिथि 7 जुलाई है।

उल्लेखनीय है कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका के कुल 19 हज़ार 504 पदों की पूर्ति के लिए इंदौर संभाग से सबसे अधिक 47 हज़ार 116 आवेदन प्राप्त हुए हैं जिन में 38 हज़ार 601 सहायिका के पद और 8 हज़ार 515 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के पद के लिए आवेदन प्राप्त हुए है। जबलपुर संभाग से कुल 44 हजार 258 आवेदन में से 34 हजार 317 सहायिका के और 9 हजार 941 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के आवेदन प्राप्त हुए है। सागर संभाग से 33 हज़ार 513 में से सहायिकाओं के पद के लिए 27 हज़ार 857 और कार्यकर्ता के लिए 5 हज़ार 656 आवेदन आए है।

भोपाल में कुल 28 हज़ार 850 आवेदन प्राप्त हुए है। इनमें सहायिका के पद के लिए 22 हजार 397 और कार्यकर्ता के लिए 6 हज़ार 453 आवेदन प्राप्त हुए है। इसी प्रकार रीवा से 28 हज़ार 519 कुल आवेदन प्राप्त हुए है, जिनमें 23 हज़ार 831 आवेदन सहायिका के और 4 हज़ार 688 आवेदन कार्यकर्ता के लिए प्राप्त हुए है। ग्वालियर संभाग के 28 हज़ार 413 आवेदनों में सहायिका के 22 हज़ार 73 और कार्यकर्ताओं के 6 हज़ार 340 आवेदन प्राप्त हुए है। उज्जैन संभाग से कुल 24 हजार 159 आवेदनों में से सहायिका के 18 हज़ार 711 और कार्यकर्ता के 5 हज़ार 448, चम्बल संभाग के कुल 14 हज़ार 829 आवेदनों में 12 हज़ार 343 सहायिका के और 2 हज़ार 486 आवेदन कार्यकर्ता के पद के लिए प्राप्त हुए है। इसके अतिरिक्त शहडोल संभाग से कुल 10 हज़ार 406 आवेदन प्राप्त हुए है, जिनमें 7 हज़ार 291 सहायिका और 3 हजार 115 कार्यकर्ता के पद के लिए प्राप्त हुए है। नर्मदापुरम से सहायिका के पद के लिए 7,001 और कार्यकर्ता के लिए 3088 कुल 10 हज़ार 89 आवेदन प्राप्त हुए है।

संपादकीय

बिहार : एसआईआर पर बवाल

बिहार में आगामी विधानसभा चुनाव के चार माह पहले चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान से समूचा विपक्ष भड़का हुआ है। जबकि चुनाव आयोग और भाजपा इसे किसी भी चुनाव के पहले होने वाली मतदाता सूची पुनरीक्षण बता रहा है। विपक्ष को आशंका है कि इस अभियान के जरिए विपक्ष समर्थक वोटरों के नाम वोटर लिस्ट से हटाए जा सकते हैं। विपक्ष को चुनाव आयोग की नीयत पर ही शक है। विपक्षी इंडिया गठबंधन ने इसे चुनाव आयोग की नोटबंदी और लोकतंत्र के लिए खतरा बताया तो एआईएमआईएम के सुप्रीमो असदुद्दीन औवेसी ने इसे वोटर एनआरसी कहा है। विपक्षी नेता इस सम्बंध में चुनाव आयोग से भी मिले, लेकिन बकौल उनके आयोग ने किसी भी सवाल का संतोषजनक जवाब नहीं दिया। विपक्षी दलों के साथ बैठक के बाद चुनाव आयोग ने बयान जारी कर कहा कि एसआईआर संविधान और कानून के प्रावधानों के अनुसार किया जा रहा है। एसआईआर की प्रक्रिया संविधान के अनुच्छेद 326, जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 और जारी निर्देशों के मुताबिक की जा रही है। अभियान के तहत बूथ लेवल कर्मचारी घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन कर रहे हैं ताकि सही वोटर का नाम ही लिस्ट में हो। जिन लोगों का सत्यापन 25 जुलाई तक नहीं होगा, उनके नाम वोटर लिस्ट से हटाए जा सकते हैं। इस मुद्दे पर एकजुट महागठबंधन ने पटना में पत्रकार वार्ता कर अपनी शंकाएं सार्वजनिक की थीं। जबकि सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन का मानना है कि राज्य में फर्जी वोटरों को रोकने के लिए यह अभियान जरूरी है। बिहार में कुल 8 करोड़ मतदाता हैं। विपक्ष का सवाल है कि यह सब चुनाव के ठीक पहले क्यों किया जा रहा है? चुनाव आयोग और सरकार की नीयत क्या है? राज्य के 3 करोड़ लोग बाहर हैं। इनके वोटर आईडी कार्ड कैसे बनेंगे? विपक्ष के विरोध के बीच चुनाव आयोग ने 2003 की मतदाता सूची अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर दी है। इस सूची में 4.96 करोड़ वोटर्स की डिटेल्स हैं। बिहार के इन मतदाताओं को अब वैरिफिकेशन की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसके पूर्व राज्य में वोटर लिस्ट का वेरिफिकेशन 2003 में कराया गया था। विपक्षी नेताओं का कहना है कि वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने लोगों से जरूरी डाक्यूमेंट मांगे जा रहे हैं, जो बहुत से लोग नहीं दे सकते। तेजस्वी यादव ने 'एक्स' पर लिखा कि पीएम के निर्देश पर पुरानी मतदाता सूची निरस्त कर नई मतदाता सूची बनाने के पीछे बिहार और बिहारियों से मतदान का अधिकार छीनना है, क्योंकि एनडीए चुनाव में हार रहा है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच इस आरोप-प्रत्यारोप से इतर समाजविज्ञानी भी बिहार जैसे चुनौतीपूर्ण राज्य के लिए इस एक्सरसाइज़ की टाइमिंग को गलत मानते हैं।

समाजशास्त्री पुष्पेन्द्र के अनुसार ये बिहार की एक बड़ी आबादी की पॉलिटिकल सिटीजनशिप पर आफ़त है। सरकार एक तरह से एनआरसी को बैकडोर से लागू करने की कोशिश कर रही है। इससे हाशिए की आबादी वोटिंग के अधिकार से वंचित होगी। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफ़ॉर्म इसे पटना हाई कोर्ट में चुनौती देने जा रहा है। क्योंकि यह फैसला अलोकतांत्रिक है। एसआईआर एक माह में कैसे पूरा हो जाएगी। गौरतलब है कि चुनाव आयोग के एक पूर्व सर्वे में पाया गया था कि राज्य के 21 फ़ीसदी वोटर बाहर हैं। दरअसल चुनौती दरअसल इन्हीं वोटरों का परीक्षण करना है। विपक्ष को लगता है कि के मन में लगता है कि चुनाव आयोग महागठबंधन के दलित, अल्पसंख्यक वोटरों को बाहर करके एनडीए को जिताना चाहता है। निश्चय ही चुनाव आयोग और सरकार को इन शंकाओं का समाधान करना चाहिए ताकि बिहार के विस चुनावों की नैतिक वैधता बनी रह सके।

सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द पर विवाद के मायने

नजरिया

अवधेश कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

संविधान की प्रस्तावना में सोशलिस्ट सेक्यूलर शब्द पर इस समय सबसे सघन बहस चल रहा है। इमरजेंसी के 50 वर्ष पर आयोजित एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले ने अपने भाषण में याद दिलाया कि जब देश में सारे मौलिक अधिकार समाप्त थे, विपक्ष के नेता जेल में थे तब ये शब्द संविधान में डाले गए। उनका यह भी कहना था कि बाबा साहब अंबेदकर ने संविधान का जो अंतिम दस्तावेज दिया और जिसे स्वीकृत किया गया उसमें सोशलिस्ट सेक्यूलर शब्द नहीं थे। इसी में उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या ये शब्द संविधान में रहने चाहिए? ऐसा लगा जैसे कांग्रेस सहित हमारे देश के बुद्धिजीवियों , एक्टिविस्टों, पत्रकारों के एक वर्ग को बिच्छू ने डंक मार लिया हो। कांग्रेस पार्टी की समस्या विकट है। आपातकाल का अपराध और पाप उसके साथ ऐसे नत्थी है जिससे न वह मुक्त हो सकती है और न जुड़े रहना चाहती है। इसलिए वह किसी बात का प्रतिवाद करे आलोचना करे तो समझ में आता है। वैसे भी राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस इस समय पुराने जमाने की अतिवादी कम्युनिस्ट और समाजवादी धारा की आवाज बनने की कोशिश कर रही है। संघ के विरुद्ध हमलावर रहना, संघ और हिंदुत्व विचारधारा के विरुद्ध स्वयं को लड़ते हुए दिखाना उसकी रणनीति का सर्वप्रमुख अंश है। उनका सबसे बड़ा आधार ही है कि ये सेक्यूलर विरोधी हैं,अल्पसंख्यकों यानी मुसलमानों, ईसाइयों को उसके नागरिक अधिकारों को हृदय से स्वीकार नहीं करते तथा एक मजहब को देश पर स्थापित करना चाहते हैं। संघ के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को लेकर राहुल गांधी और उनके रणनीतिकार लगातार अलग-अलग तरीके से यही आरोप भारत और दुनिया भर में लगाते रहे हैं। इसलिए उनको इस वक्तव्य पर टूट पड़ना ही था। हालांकि वे इस बात का उत्तर नहीं दे रहे कि जब संविधान निर्माताओं ने ये शब्द नहीं डाले तो आपातकाल में क्यों जोड़े गए? आपातकाल में जब पूरी शक्ति तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के हाथों से निहित थी, विपक्ष के प्रमुख नेता ही नहीं विरोधी दिखने वाले संगठनों का शीर्ष नेतृत्व या तो जेल में था या अंडरग्राउंड तो ऐसी क्या स्थिति उत्पन्न हो गई थी जिससे इन शब्दों का डालना आवश्यक हो गया था?

वैसे होसबोले के भाषण का यह एक पहलू था। उन्होंने कार्यक्रम में हर विचारधारा के उपस्थित समूह के बीच कहा कि आपातकाल लागू होने के पूर्व चलने वाले आंदोलन में चुनाव सुधार, शीर्ष भ्रष्टाचार, शिक्षा व्यवस्था में सुधार , परिवारवाद आदि अनेक मुद्दे थे और आपातकाल को याद करते समय बात करनी चाहिए कि इन मामलों में क्या हुआ। उसी में आगे बढ़ते हुए उन्होंने अन्य कदमों के साथ संविधान में लाए गए परिवर्तनों का विषय उठाया। इस तरह उनके प्रस्तावना में सेक्यूलर सोशलिस्ट शब्द जोड़ने का विषय उनके भाषण कै संपूर्ण पैकेज का एक अंश था। खैर, उनमें जाए बिना हम इन पर ही विचार करते हैं। प्रस्तावना आधुनिक राजव्यवस्था में संविधानों की आत्मा मानी जाती है। प्रस्तावना संविधान का बीज या आधार होता है और इसलिए सामान्यतया यह अपरिवर्तनीय होता है। विश्व के किसी प्रमुख देश ने

शायद ही कभी प्रस्तावना में बदलाव किया हो। सन् 1973 में केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य मामले में उच्चतम न्यायालय के 13 न्यायाधीशों की पीठ ने प्रस्तावना पर गहराई से विचार किया था। न्यायमूर्ति एच आर खन्ना ने कहा था कि प्रस्तावना संविधान की व्याख्या के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करती है और यह दर्शाती है कि संविधान की सत्ता का स्रोत कौन है? अर्थात भारत की जनता। संविधान सभा में भी प्रस्तावना पर बहस हुई और इसे आवश्यक, सही और उचित समझकर जोड़ा गया। आपातकाल में भारत के लोग अपने देश की सरकार के दासत्व में थे। इस तरह 1976 के 42वें संशोधन के द्वारा जिसे बदला नहीं जा सकता या नहीं जाना चाहिए उसे बिना किसी औचित्य के फुहड़ तरीके से बदल दिया गया।

संविधान सभा में इसे लेकर काफी बहस हुई थी जिनमें विस्तार से जाना न संभव है न आवश्यक। इतना कहना पर्याप्त है कि के टी शाह और कुछ सदस्यों ने कई बार कोशिश की कि सेक्यूलर और सोशलिस्ट शब्द संविधान में डाला जाए। सदस्यों ने गंभीर विमर्श के बाद इसे स्वीकार नहीं किया। स्वयं डॉ बाबा साहब अंबेडकर ने इसके विरुद्ध मत व्यक्त किया। तो कांग्रेस और विरोधी जो भी कहें सबसे मूल प्रस्तावना को बदल देना संविधान निर्माता की भावनाओं की हत्या थी तथा उन सबके प्रति विश्वासघात। संविधान हाथ में लेकर संविधान बचाने की सेना बनती कांग्रेस संविधान के साथ किए गए अत्याचारों को कैसे स्वीकार सकती है। संविधान सभा में इस बात पर आम सहमति थी कि यूरोप या पश्चिम से निकला सेक्यूलरिज्म या सेक्यूलरवाद हमारे यहां अभिप्रेत नहीं है। रीलिजन और धर्म समानार्थी नहीं हैं। रीलीजन का दर्शन एक मसीहा या पैगम्बर के कथनों की विशेष पुस्तक में निहित है। यही अंतिम सत्य है जिस पर न प्रश्न उठ सकता है न उसमें बदलाव हो सकता है। यह एक वृत्त है जिसमें बाहर वालों के लिए स्थान नहीं। भारतीय सभ्यता में धर्म की अवधारणा इससे अलग है। यानी प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ हमारा संबंध अत्यंत पवित्र है जिसके मूल में सृजन है और हमारा दायित्व सबके प्रति है। तो हमारे यहां धर्म अपने दायित्व के पालन से संबंधित था। यहां ईसाईयत या इस्लाम की तरह रीलिजन का कोई संगठित तंत्र नहीं रहा जिसका राज्य व्यवस्था पर नियंत्रण या उसमें लगातार निष्ठुर हस्तक्षेप हो। वहां राज्य को रीलिजन से अलग करने या रीलिजन के आघात से राज्य को बचाने के लिए सेक्यूलरवाद विचार निकला। इसीलिए संविधान सभा में माना गया कि हमारी राज्य व्यवस्था का चरित्र सर्वधर्म समभाव का होगा और सेक्यूलरिज्म का अर्थ इसके उलट है।

सेक्यूलरिज्म का अर्थ हम पंथ निरपेक्ष मानते हैं पर उसके समर्थक इसका अर्थ धर्मनिरपेक्ष बताते हैं। धर्म से निरपेक्ष होने का अर्थ संपूर्ण प्रकृति और ब्रह्मांड के प्रति अपने दायित्वों से निरपेक्ष हो जाना है। कल्पना करिए यह विचार कितना अनर्थकारी है। भारतीय धर्म और सभ्यता में सांप्रदायिकता के लिए कोई स्थान ही नहीं है। वैसे संविधान में सेक्यूलर शब्द नहीं डालने के बावजूद स्वतंत्रता के बाद से सत्ता संचालन करने वाल स्वयं को सेक्यूलर कहते हुए कई बार धार्मिक होने का प्रदर्शन तो करते रहे किंतु व्यवहार में आस्थाओं, कर्मकांडों,परंपराओं आदि को अंधविश्वास, पिछड़ेपन और मूर्खता बनाकर पूरी पीढ़ी को मानसिक विकृति का शिकार बना दिया। धर्म आधारित भारतीय सभ्यता के संस्कार के कारण बहुसंख्य लोग अंदर मानसिक दमन की अवस्था में रहे। उन्हें लगता रहा कि जो कुछ वे हैं उसे प्रकट करेंगे तो उन्हें अंधविश्वासी और पिछड़ा मान लिया जाएगा। इस कारण उनमें अनेक प्रकार की कुंठा और विद्रोह का भाव पनपा। इसका परिणाम व्यवहार में अनर्थकारी ही हुआ है। सोशलिस्ट शब्द वास्तव में कम्युनिस्ट विचारधारा से ही निकला। रुस का पूर्वज सोवियत संघ खूनी क्रांति के बाद स्वयं को सोशलिस्ट रिपब्लिक घोषित किया और उससे प्रभावित ज्यादातर देशों ने भी। इंदिरा गांधी और परिवार को सोवियत लॉबी का पूरा समर्थन था और उसके प्रभाव में भारत की अनेक नीतियां बनीं जिनमें गरीबी हटाओ नारे से लेकर बैंकों का राष्ट्रीयकरण शामिल था। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इन शब्दों को नासूर और उथल-पुथल पैदा करने वाला कहा।

जिन सेक्यूलर और सोशलिस्ट देशों की बात हम करते हैं उन्होंने दुनिया में एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, अमेरिका और यूरोप तक में जितनी सभ्यताओं को नृशंसता से नष्ट किया, विरोधियों की जितनी संख्या में नृशंसता से हत्याएं की, जैसी हिंसा की और आज भी कर रहे हैं उसके आलोक में विचार करिए तो फिर सेक्यूलरिज्म और सोशलिज्म का चरित्र समझ में आ जाएगा। वैसे भी एक प्रधानमंत्री, जिसे उच्च न्यायालय ने छः वर्ष तक चुनाव लड़ने के आयोग्य करार देते हुए चुनाव रद्द कर दिया हो तथा उच्चतम न्यायालय सशर्त स्थगनादेश देते हुए आदेश दिया हो कि आप संसद की कार्यवाही में भाग ले सकतीं हैं लेकिन मतदान नहीं कर सकती वह अपनी निरंकुशता के लिए आपातकाल लागू कर प्रधानमंत्री बनी रहें तो उनके द्वारा अपनी संकीर्ण सत्तावादिता के लिए संविधान में लाए गए परिवर्तनों को स्वीकार करने से बड़ा दुर्व्यवहार संविधान के साथ कुछ नहीं हो सकता। इसलिए आप संघ के विरोध या समर्थन से कुछ समय के लिए बाहर निकल होसबोले के कथन पर भारत के दूरगामी भविष्य का ध्यान रखते हुए विचार करेंगे तो आपका निष्कर्ष यही आएगा कि इनका स्थान संविधान में नहीं हो सकता।

शिक्षा और विश्वविद्यालयों को समावेशी बनाना होगा

शिक्षा प्रणाली

डॉ. अनीश कुमार
लेखक गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यापन करते हैं ।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में बीते दशकों में कई सुधार हुए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे प्रयासों ने नई दिशा देने की कोशिश की है। डिजिटल शिक्षा, कौशल-आधारित पाठ्यक्रम, और मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास हो रहे हैं। फिर भी वास्तविकता यह है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच भारी असमानता है। स्कूलों की अवस्थापना सुविधाएँ, शिक्षकों की संख्या, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता आदि क्षेत्रों में भारी अंतर है।

बहुत से राज्यों में शिक्षकों को समय पर वेतन नहीं मिलता। संविदा शिक्षकों की स्थिति और भी दयनीय है। उन्हें स्थायी नौकरी की गारंटी नहीं होती और वे न्यूनतम वेतन पर कार्य करते हैं। साथ ही, महँगाई के इस दौर में वेतन संरचना अपर्याप्त सिद्ध हो रही है। शिक्षकों से पढ़ाने के अलावा अनेक गैर-शैक्षणिक कार्य करवाए जाते हैं, जैसे जनगणना, चुनाव ड्यूटी, मध्यान्ह भोजन की निगरानी आदि। इससे उनकी शैक्षणिक गुणवत्ता और शिक्षण में समय प्रभावित होता है।नई तकनीक और शैक्षिक पद्धतियों के अनुरूप शिक्षकों का पुनः प्रशिक्षण (retraining) नहीं हो रहा है। बहुत से शिक्षक डिजिटल उपकरणों के प्रयोग में दक्ष नहीं हैं, जिससे ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

पहले शिक्षक को 'गुरु' का दर्जा प्राप्त था, परंतु आज समाज में शिक्षकों का सम्मान धीरे-धीरे घट रहा है। विद्यार्थी, अभिभावक और प्रशासन तीनों से अपेक्षित सहयोग और सम्मान का अभाव है।विद्यालयों में कई बार शिक्षकों को ऐसे छात्रों से जूझना पड़ता है जो अनुशासनहीन होते हैं। इसके अलावा परीक्षा परिणाम, बोर्ड के दिशा-निर्देश और सरकारी लक्ष्य प्राप्ति का अतिरिक्त दबाव भी शिक्षक पर पड़ता है।अत्यधिक परीक्षा केंद्रित शिक्षाः सोचने-समझने की स्वतंत्रता की जगह अंक पाने की होड़ ने शिक्षा को रटंत प्रणाली बना दिया है।कई बार सरकार की योजनाएँ अच्छी होती हैं, पर उनका क्रियान्वयन कमजोर होता है।

भारत की शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक दोनों समाज के विकास के मूल स्तंभ हैं। यदि शिक्षक को उचित सम्मान, सुविधाएँ, और स्वतंत्रता दी जाए, तो वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन अधिक प्रभावी ढंग से कर सकेगा। हमें यह समझना होगा कि एक सशक्त शिक्षक ही सशक्त राष्ट्र का निर्माता होता है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था की मजबूती का पहला कदम शिक्षकों की समस्याओं का समाधान ही होना चाहिए।

आज का समाज जिस नैतिक संकट से गुजर रहा है, उसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वह विद्यार्थियों में सत्य, करुणा, अहिंसा, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का विकास करता है। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपने आचरण से नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करे और विद्यार्थियों को भी उस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे।

शिक्षक समाज में व्याप्त असमानताओं–जैसे जातिवाद, लिंग भेद, आर्थिक विषमता आदि–के विरुद्ध जागरूकता फैलाने वाला साधन बन सकता है। वह शिक्षा को समावेशी बनाकर विद्यार्थियों में समानता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की भावना का विकास करता है। इससे समाज अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण बनता है। एक शिक्षक की भूमिका केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होती। वह समाज के व्यापक कार्यों–जैसे महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण सुरक्षा, स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जागरूकता आदि–में भी सक्रिय भाग ले सकता है। ऐसा करके शिक्षक समाज में एक आदर्श और प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित होता है। शिक्षक को बाल अधिकारों के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके विद्यार्थियों को किसी प्रकार का शोषण या भेदभाव न सहना पड़े। बाल श्रम, बाल विवाह और लैंगिक असमानता जैसे मुद्दों पर शिक्षक की सजग दृष्टि और सक्रिय भूमिका समाज में बड़े परिवर्तन ला सकती है।

शिक्षक विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं से जोड़ने का कार्य करता है। वह भाषा, लोककला, त्योहारों, और ऐतिहासिक परंपराओं को सम्मान दिलाता है। इससे समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहता है और वैश्वीकरण की दौड़ में अपनी पहचान नहीं खोता। भारत एक लोकतांत्रिक देश है और इस व्यवस्था की रक्षा के लिए नागरिकों में लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ होना आवश्यक है। शिक्षक विद्यार्थियों को समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और भाईचारे जैसे संविधानिक सिद्धांतों से परिचित कराता है और उन्हें व्यवहार में उतारने की प्रेरणा देता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की शक्ति, संवाद कौशल और समस्या समाधान की क्षमता का विकास करता है। यह गुण उन्हें भविष्य में समाज का नेतृत्व करने और उसमें सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में समर्थ बनाते हैं।

शिक्षक का कार्य केवल पढ़ाना नहीं है, बल्कि समाज को जागरूक, संवेदनशील, नैतिक और सशक्त बनाना भी उसका दायित्व है। यदि शिक्षक अपने सामाजिक कर्तव्यों को निष्ठा, संवेदनशीलता और समर्पण के साथ निभाए, तो समाज न केवल शिक्षित होगा, बल्कि संस्कारित और समृद्ध भी बनेगा। ऐसे शिक्षक ही एक सशक्त राष्ट्र और समतामूलक समाज के वास्तविक निर्माता होते हैं। 'एक शिक्षक की समाज में भूमिका किसी दीपक की तरह है, जो स्वयं जलता है और दूसरों के जीवन में उजाला करता है।'

शिक्षक केवल ज्ञान का दाता नहीं होता, बल्कि वह समाज के निर्माण का प्रमुख स्तंभ होता है। उसका कर्तव्य न केवल विद्यार्थियों को पढ़ाना है, बल्कि उन्हें एक उत्तरदायी नागरिक बनाना भी है। एक अच्छा शिक्षक समाज में नैतिक मूल्यों, सहिष्णुता और समानता की भावना का बीजारोपण करता है।भारतीय संस्कृति में शिक्षक को 'गुरु' कहा गया है, जो माता-पिता के बाद सबसे अधिक सम्मान का पात्र होता है। सामाजिक दृष्टि से शिक्षक वह दीपक है जो अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर समाज को प्रकाशमान करता है। उसके विचार, व्यवहार और कार्य समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। आज के यांत्रिक और प्रतियोगितात्मक युग में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। शिक्षक का सामाजिक कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, करुणा, और अनुशासन जैसे गुणों से परिचित कराए। एक शिक्षक की शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए।एक शिक्षक को समाज मां व्याप्त असमानता, जातिवाद, लिंगभेद आदि के खिलाफ जागरूकता फैलानी चाहिए। उसका दायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों को समावेशी और न्यायप्रिय दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दे ताकि वे सबके लिए समान अवसर के पक्षधर बनें।

शिक्षकों को स्कूल की चारदीवारी से बाहर निकलकर ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भाग लेना चाहिए। इससे वे समाज में प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं।शिक्षक का सामाजिक कर्तव्य यह भी है कि वह बाल श्रम, बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव जैसे मुद्दों पर आवाज़ उठाए और विद्यार्थियों को उनके अधिकारों के प्रति सजग करे। वह बच्चों की आवाज़ बनकर उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्न करे। शिक्षक स्थानीय और राष्ट्रीय संस्कृति, परंपरा तथा भाषा को जीवित रखने में सहायक होता है। वह विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ता है और विविधता में एकता की भावना को बल देता है, जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है।

एक शिक्षक को विद्यार्थियों में लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता, और धर्मनिरपेक्षता जैसे संविधानिक मूल्यों का विकास करना चाहिए। इससे विद्यार्थी न केवल अच्छे छात्र बनते हैं, बल्कि समाज के जागरूक नागरिक भी बनते हैं।शिक्षक समाज को ऐसे नेतृत्वकर्ताओं की नई पीढ़ी देता है जो राष्ट्रहित में सोचते हैं। वह विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल, और निर्णय लेने की योग्यता विकसित करता है जिससे वे सामाजिक बदलाव के अग्रदूत बन सकें।इस प्रकार, शिक्षक का कार्य केवल विद्यालय में सीमित नहीं है। उसका व्यापक सामाजिक कर्तव्य है– समाज में नैतिकता, संवेदनशीलता और विवेक को बनाए रखना। यदि शिक्षक अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाए, तो न केवल शिक्षा व्यवस्था सशक्त होगी, बल्कि समाज भी स्वस्थ, समतामूलक और उन्नतिशील बनेगा।

पनौती और चुनौती के बीच फंसा आदमी

कटाक्ष

प्रीतम लखवाल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

आम आदमी दो चीजों से बहुत घबराता है। पहली है चुनौती और दूसरी है पनौती। चुनौती से निपटने के लिए उसे अंदर से स्ट्रांग होना पड़ता है, लेकिन पनौती का अब तक कोई हल वल सामने नहीं आया है। इसलिए इंसानों की इस दुनिया में चुनौती से अधिक दिक्कत पनौती से है। पनौती से बचने के लिए अभी तक कोई मोटिवेशनल स्पीकर सामने नहीं आए हैं, जबकि चुनौती का सामना करने का ज्ञान बांटने वाले मोटिवेशनल स्पीकर्स की नई और पुरानी दोनों जनरेशन के लाखों लाख वीडियो, यू-ट्यूब, सोशल मीडिया में तैर रहे हैं। जिन्हें समझ नहीं आते वे इन वीडियो को आगे धकिया देते हैं और फिर शान से आग्रह करते हैं कि इसे इतना फैलाओ कि यह दुबारा 'अपन' के पास आ जाए। जब तक ये वीडियो पूरे ब्रह्मांड का चक्कर लगाकर वापस 'अपन' के पास आ जाता है, तब तक दूसरी चुनौती खड़ी हो जाती है। पनौती के बारे में ऐसे कोई वीडियो अभी तक तो सोशल मीडिया यूनिवर्सिटी के दिग्गजों के हाथ लगे ही नहीं हैं। 'अरे ! बने हो तो हाथ लगेंगे न... ' यह सुनकर मेरे कान खड़े हो गए और सिर भन्ना गया कि यह ध्वनि आई कहां से इधर-उधर देखा। आस-पास नजर दौड़ाई, लेकिन कोई नजर नहीं आया। मुझे द्वापर में हुई आकाशवाणी का ध्यान हो आया, लेकिन मैं सोच में पड़ गया कि कलयुग में ऐसा कहां संभव है? यहां खुद की अंतरआत्मा ही आवाज नहीं लगाती तो 'आकाश' कहां से अपनी 'वाणी' का उद्घोष करेगा। मेरे सामने यह नई चुनौती आ गई। मैं उस आवाज को खोज रहा था, जो अभी-अभी सुनाई दी। कुछ देर बाद एक धवल वस्त्रधारी आकर्षक व्यक्तित्व एकदम से सामने प्रकट हुए। मैं तुरंत पहचान गया ये तो धीरजचंद हैं। इन्हें अपने धैर्य के लिए जाना जाता है। अच्छे खासे वक्ता हैं। मंच पर बोलते हैं, कभी-कभी संचालन जैसी जरूरी प्रक्रिया भी कर लेते हैं। ये विचारक कम नेता टाइप के व्यक्ति हैं, लेकिन इनकी पूछपरख हमारे शहर में कम नहीं है। जब वे सामने आ गए तो मैं उनसे ही पूछ बैठा कि अभी-अभी आपने क्या कह गए? वे अपने काले में श्वेत मिश्रित बालों को सहेजते हुए बोले। सच ही तो कहा है- अभी तक पनौती को लेकर कोई वीडियो, पोस्ट या रील आदि बनी ही नहीं। मैंने उन्हें कुरेदने का मन बना लिया कि ये बताइए कि आखिर ये पनौती है क्या बीमारी? वे बिल्कुल गंभीर हो गए। अपने नेत्र ऐसे बंद किए, जैसे कोई गहरे चिंतन में चले गए हों। आंखे खोलकर बोले भाई। तुम्हें इतना ही नहीं पता कि पनौती किसको बोलते हैं। ये शब्द आया कहां से। मैंने ना में मुंडी हिलाई। वे आश्वस्त हो गए कि इस मामले में मैं अज्ञानी हूं। फिर वे बोले कि पनौती शब्द का इस्तेमाल उस व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो अपने आस-पास के लोगों के लिए दुर्भाग्य या बुरी खबर लाता है। यह सुनकर मेरा दिल की रफ्तार चार गुनी हो गई। फिर वे बोले कि पनौती शब्द का एक और मतलब होता है, पन यानी 'पानी' और 'औती' यानी बाढ़। यानी बाढ़ हो या पनौती दुख तो दोनों ही लाते हैं। हमारे यहां एक व्यक्ति ऐसा ही है, जब देखो तब कोई बुरी खबर सुनाता है। वह न स्थान देखता है न ही चौराहा। न पान की दुकान देखता न चाय की थड़ी। यानि उसकी काबिलियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि न्यूज चैनल वालों को ब्रेकिंग बाद में मिलती है वो पहले फ्लेश कर देता है।

मोहल्ले में मरण मौत की खबर हो या दूसरे शहर में कोई अप्रिय घटना। उसके पास सब रहती है। उसे आता देख अब तो लोग रास्ता ही बदल लेते हैं। उधर, धीरजचंद वहां से जाने को हुए तो मैंने उनसे पूछा कि इनसे बचाव का कोई उपाय? तो वे बोले-इसको लेकर सरकार भी परेशान है। सरकार में भी कई पनौतियां हैं तो अनेकों चुनौतियां हैं। सरकार को दोनों से निपटना है। अब आप ही बताइये कि पनौती को लेकर सरकार परेशान क्यों है? वे बोले-ये लोग ही हैं जो सरकार को यू-टर्न लेने पर मजबूर करते हैं। इनकी जुबान बहुत लचीली और स्किड करने वाली होती है। कोई उपाय मिलेगा तो निसंदेह बताउंगा और वे सिर्फ इतना बोले-इनसे जितनी दूरी रखोगे सुखी रहोगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बात-बात में खामियाँ ढूँढने वाला आदमी

व्यंग्य

शशांक दुबे
लेखक व्यंग्यकार हैं।

घर में घुसते ही उन्होंने फरमाया, 'यार ये डोर बेल तुम लोगों ने इतनी ऊंची क्यों लगा रखी है? पंजे के बल खड़ा होना पड़ता है'। मेरी निगाह उनके कद की ओर झुकती चली गई। उन्हें असहज होने से बचाने के लिए मैंने कहा, 'अरे कुछ नहीं, ये आस पड़ोस के कुछ शरारती बच्चे दिन भर उधम किए रहते हैं। दौड़ते भागते कभी भी घंटी पर हाथ साफ कर जाते हैं'। तभी श्रीमती जी ट्रे में पानी के साथ घर में बनी बेसन चक्की ले आई। उन्होंने चक्की के टुकड़े का एक बटे आठ वाँ हिस्सा ज़बान को टच करते हुए 'कच्ची है' कहकर शेष सात बटे आठवां हिस्सा प्लेट में छोड़ दिया। श्रीमती जी को संयत होने में दस मिनट लग गए। थोड़ी देर आम हिन्दुस्तानी नारी की तरह गुस्सा पिया और बाहर आकर 'एयर होस्टेसीय' मुस्कान के साथ पूछा, 'चाय में शकर चलेगी?' उन्होंने एट पीएम वालों की तरह अंगूठे और तर्जनी के बीच में इंच भर गैप दर्शाते हुए समझाया, 'बस इत्ती सी बनाइयेगा और चीनी एकदम कम। बस दिखाने भर की'।

इस बीच उन्होंने सेंटर टेबल के नीचे बेतरतीबी से ठूंसे हुए हफ्ते भर के अखबारों, चार महीने में आई मुफ्तिया किताबों और पत्रिकाओं के झुंड में से एक शादी की पत्रिका उठाते हुए सवाल किया, 'अरे आपको भी पत्रिका मिली थी? पर आप दिखे तो नहीं थे उस दिन?' उस भूसे के ढेर में उनके हाथ आई सुई को फिर से टेबल के नीचे घुसाते हुए मैंने बताया, 'उस दिन एक शवयात्रा में जाना पड़ा था', सुनते ही उनकी आँखें चमक उठीं, 'किसकी?', मैंने बताया, 'अरे इंदौर में पत्नी के एक रिश्तेदार थे', सुनकर उन्होंने मुंह बिचकाया। हालांकि तब तक चाय नहीं आई थी। फिर बताया 'अच्छा हुआ आप शादी में नहीं आए थे। अव्यवस्थाओं का बोलबाला था। बारात हमेशा की तरह रात दस बजे बाद आई थी, बे-मौसम बरसात के कारण पूरे गार्डन में मच-मच मची थी, खाने वालों की कोहनियाँ आपस में टकरा रही थीं, आपकी भाभी की नई साड़ी पर रायता ढुल गया था, गाड़ी आधे किलोमीटर दूर पार्क करनी पड़ी थी'।

आश्चर्य की बात थी कि उन्हें आए दस मिनट हो चुके थे, लेकिन अभी तक उन्होंने अपना मोबाइल जेब से बाहर नहीं निकाला था। आखिर सब्र का बांध टूटा और मोबाइल निकाल कर नए आए संदेश टटोलने लगे। तभी उनकी निगाह एक संदेश पर पड़ी और जोर जोर से हंसने लगे। मैं समझ गया, जरूर किसी की गलती पकड़ी होगी। लेकिन यह गलती मानवीय नहीं, कुदरती थी। किसी ने परिवार में आई नई आमद का फोटो डाला था। 'भैया कभी बड़े बोल नहीं बोलने चाहिए। सुनील की पत्नी दिन-रात गोरे होने पर इठलाती रहती थी। अब देखो उनका पोता। ऊपर वाला भी देख के ही देता है'।

चाय आने में अब भी वक्त था। तब तक वे शहर के ट्राफिक को कोसने, मौसम विभाग के फिर से फैल होने, सोनम-राजा कांड की जांच धीमी हो जाने, बहू द्वारा रोज खाना बनाने से इनकार कर देने, बिजली का बिल ज्यादा आ जाने, समधन द्वारा एक प्रोग्राम में अचानक मिल जाने पर मुंह बिचका लेने, आम में वो स्वाद न आने, एक लेखक मित्र द्वारा फिल्मी लेख में राजेश खन्ना की फिल्मों के नामों की सूची में 'पापी पेट का सवाल है' का नाम भूल जाने जैसे कई गिले-शिकवे सप्लाई कर चुके थे। अंततः चाय आई। हम पति पत्नी की निगाह उनके चेहरे की ओर थी। हम यह जानना चाहते थे कि बात-बात में खामियां ढूंढने वाला यह शख्स इसमें दूध या चीनी या पानी को लेकर कौनसा नुक्स निकालने वाला है। हमारी हालत वैसी ही थी, जैसी वाद विवाद प्रतियोगिता के परिणाम आने से पहले प्रतिभागियों की होती है। उनके चेहरे पर मुस्कान थी, इस मुस्कान में खुशी थी या ताना, यह उनके जाने के एक घंटे बाद भी अब तक हम तय नहीं कर पाए हैं।

भारतीय राष्ट्रवाद के जागरणकर्ता स्वामी विवेकानंद

पुण्य भूमि भारत सदैव से ही वीर प्रसूता रही है भारत जननी ने ऐसे वीर पुत्रों को जन्म दिया है जिन्होंने अपने तप, ज्ञान, कर्म, कौशल से भारत का मस्तिष्क ऊंचा किया है और दुनिया को राह दिखाई है,ऐसे ही एक संन्यासी योद्धा स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। पिताजी विश्वनाथ दत्त कोलकाता के सुप्रसिद्ध वकील थे तो माता भवनेश्वरी देवी एक धार्मिक विचारों वाली आदर्श महिला। स्वामी जी के बचपन की तमाम घटनाओं से लेकर उनके स्वामी विवेकानंद बनने तक की सभी घटनाएं अर्थात् बालक बिले (स्वामी जी के बचपन का नाम) के बचपन की शरारतें या फिर युवा नरेन्द्र का जिद्दी स्वभाव हो या फिर स्वामी रामकृष्ण परमहंस स्पर्श पाकर स्वयं की अनुभूति या उसके पश्चात दुनिया को भारत की ज्ञान शक्ति का एहसास करने वाले स्वामी विवेकानंद के बारे में भारत का प्रत्येक व्यक्ति जानता है।

पुण्यतिथि पर विशेष

सुरेन्द्र शर्मा

लेखक मप्र भाजपा कार्यसमिति के सदस्य हैं।

हे निर्भय चरित्र धैर्य रखो ,उत्साहित हो गर्व करो कि तुम एक भारतीय हो और गर्व से उद्घोष करो कि मैं एक भारतीय हूं, हर भारतीय मेरा भाई है भारत मेरा जीवन है भारत का भला मेरा भला है। आओ सभी मिलकर परिश्रम करें मेरे भाइयों यह कोई सोने का समय नहीं है हमारे कार्य पर निर्भर है भविष्य में आने वाला भारत ।

वह हमारी मातृभूमि हमारे लिये तैयार खड़ी है वह तो केवल सो रही है। उठो और जागो और देखो उसे बैठा अपने सनातन सिंहासन पर पुनरुत्थित,पुनर्जीवित पहले से अधिक गौरवशाली हमारी मातृभूमि। देशवासियों के अंदर राष्ट्रवाद की इस प्रखर ज्वाला को प्रज्ज्वलित करने वाले थे युग नायक स्वामी विवेकानंद।

पुण्य भूमि भारत सदैव से ही वीर प्रसूता रही है भारत जननी ने ऐसे वीर पुत्रों को जन्म दिया है जिन्होंने अपने तप ज्ञान कर्म कौशल से भारत का मस्तिष्क ऊंचा किया है और दुनिया को राह दिखाई है,ऐसे ही एक संन्यासी योद्धा स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। पिताजी विश्वनाथ दत्त कोलकाता के सुप्रसिद्ध वकील थे तो माता भवनेश्वरी देवी एक धार्मिक विचारों वाली आदर्श महिला।।

स्वामी जी के बचपन की तमाम घटनाओं से लेकर उनके उनके स्वामी विवेकानंद बनने तक की सभी घटनाएं अर्थात बालक बिले (स्वामी जी के बचपन का नाम) के बचपन की शरारतें या फिर युवा नरेन्द्र का जिद्दी स्वभाव हो या फिर स्वामी रामकृष्ण परमहंस स्पर्श पाकर स्वयं की अनुभूति या उसके पश्चात दुनिया को भारत की ज्ञान शक्ति का एहसास करने वाले स्वामी विवेकानंद के बारे में भारत का प्रत्येक व्यक्ति जानता है।

स्वामी विवेकानंद का भारत के क्षितिज पर उदय उस समय हुआ जब सदियों की दासता से ग्रसित भारत अपने स्व को भूल चुका था और अंग्रेजों के अत्याचारों से कराह रहा था । कभी विश्व गुरु कहलाने वाले भारत को उस समय पश्चिम के देश सपेरों और बंदर नचाने वालों का देश कह कर पुकारते थे स्वामी जी ने उसे कठिन काल में न केवल भारत को उसके स्व का एहसास कराया बल्कि दुनिया को भारत के ज्ञान के सम्मुख नतमस्तक करने का काम भी किया।

11 सितंबर 1893 दुनिया के इतिहास का स्वर्णिम दिन है जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता शिकागो धर्म सभा के हजारों दर्शकों से खचाखच भरे सभागृह के मंच पर सभी धर्म के ज्येष्ठ श्रेष्ट प्रतिनिधि विराजमान थे जो सभापति की आज्ञा से अपने धर्म का संक्षिप्त परिचय देकर अपना स्थान ग्रहण कर लेते थे उन सब के अंत में बोलने का अवसर मिला भारत के प्रतिनिधि युवा संन्यासी अर्थात स्वामी विवेकानंद जी को, भगवा वस्त्र पहने आध्यात्मिक तेजोमय चेहरे की ओर संपूर्ण सभा का ध्यान बरबस खिंचता ही चला गया,स्वामी जी के मुखारविंद से निकले पहले ही वाक्य 'अमेरिका के निवासी मेरे भाईयो और बहनो' ने ऐसा जादू किया कि करतल ध्वनि से सभागार गुंजायमान हो उठा, स्वामी जी के शब्दों की शक्ति एवं भारत के आत्मीय स्नेह के आनंद से श्रोता भाव विभोर हो गए । जैसे जैसे स्वामी जी बोलते जाते श्रोतागण खड़े होते जाते चारों ओर हो रही करतल ध्वनि रुकने का नाम नहीं ही ले रही थी पश्चिमी देशों के संवेदना शून्य हृदय में कुछ समय के लिए मानव जाति के एकत्व की अनुभूति उत्पन्न हो गई थी स्वामी जी की वाणी में मानव की मानव के प्रति संवेदना वसुधैव कुटुंबकम् की भावना प्रकट हो रही थी। अपनी उन्नति अपनी समृद्धि पर गर्व करने वाला पश्चिम पागलों की भांति स्वामी जी के पीछे घूमने लगा वहां के समाचार पत्रों ने लिखा उनका भाषण सुनने के बाद भारत जैसे ज्ञान समृद्धि देश में धर्म प्रचारक भेजने की बात करना मूर्खता है। भगिनी निवेदिता ने लिखा है-, स्वामी जी ने जब शिकागो महासभा में भाषण देना प्रारंभ किया तो हिंदू संस्कृति का अतीत उनके माध्यम से श्रोताओं के समक्ष खड़ा हो गया भारत के गौरवशाली भूतकाल की ज्योति देखकर वहां उपस्थित लोग हतप्रभ हो गए पर जब स्वामी विवेकानंद का भाषण समाप्त हुआ तब आधुनिक हिंदू धर्म की सृष्टि हुई।

स्वामी जी कहते थे यदि राष्ट्र को जीवित रखना है तो उसके निवासियों के अंदर राष्ट्रीय भावना होना आवश्यक है यह भाव विश्व के लिए कार्य करता है और उसकी धारणा के लिए आवश्यक है जिस दिन विश्व की धारणा के लिए उसे भाव की तत्व रूप में आवश्यकता समाप्त हो जाती है उसे दिन उस राष्ट्र का विनाश हो जाता है हम भारतवासी इतनी आपत्तियां दुख दरिद्र एवं अन्तर्वाह अत्याचारों को झेल कर भी अब तक जीवित हैं यही प्रमाण है कि हमारा कोई राष्ट्रीय भाव है जिसकी विश्व की धारणा के लिए आवश्यकता है। इस राष्ट्रीय भाव को ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र की आत्मा अथवा चिति कहा है।

स्वामी जी ने राष्ट्रवाद का आह्वान करते हुए कहा है कि 'वीर भोग्या वसुंधरा' अतः शौर्य को प्रकट करो अपने शत्रु को जीतने और संसार को भोगने के लिए साम दाम दंड और भेद की चतुर्विध राजनीति को परिस्थिति की आवश्यकता के अनुसार अपनाओ। यदि तुम तुम अपकारों को चुपचाप सह कर किसी की भी ठोकरें खाकर और अत्याचारों को पीकर लज्जाजनक जीवन विताओगे तो तुम्हारे इहलोक का जीवन तो नर्क तुल्य होगा ही परलोक में भी तुम्हें वही मिलेगा। शास्त्रों का भी यही मत है अतः स्वधर्म का पालन करो केवल यही परम सत्य है मेरे प्रिय स्वधर्मियों यही मेरा तुम्हारे उपदेश है निसंदेह अन्याय मत करो परपीड़न मत करो,यथाशक्ति परोपकार भी करो किंतु दूसरे के अन्याय को चुपचाप सह लेना घोर पाप है। सठे शाठयम समाचारेत ही स्वधर्म है। गृहस्थ को परिश्रम एवं उत्साह पूर्वक धनोपार्जन करना चाहिए यथा शक्ति लोक कल्याण शुभ कार्य करना चाहिए ,यदि तुम यह सब नहीं कर सकते तो तुम मनुष्य कहलाने का दावा ही कैसे कर सकते हो? तब तुम्हारे लिए मोक्ष की बात करना तो दूर तुम सच्चे गृहस्थ भी नहीं रह सकते। ज्ञान के देश भारत के पिछड़ने का सबसे बड़ा कारण स्वामी जी अशिक्षा एवं प्रचलित शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों को मानते थे वह कहते थे जनसाधारण को शिक्षित करो और ऊपर उठाओ केवल तभी यह देश यथार्थ में राष्ट्र के रूप में खड़ा हो सकेगा ।

स्वामी जी ने कहा था कि हमारा लक्ष्य यही है कि हमारे देश की संपूर्ण शिक्षा लौकिक और परमार्थिक हमारे हाथों में हो और यह शिक्षा हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो और जहां तक संभव हो सके राष्ट्रीय पद्धति से ही दी जानी चाहिए हम प्रत्येक आत्मा का आह्वान करें उत्तीष्ठ! जागृत!! प्राप्यवरान्नीवोवोधतः उठो! जागो!! और जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो कहीं मत ठहरो। जागो दुर्बलता के मोह जाल से निकालो वास्तव

में कोई दुर्बल नहीं है आत्मा अनंत सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी है खड़े हो स्वयं को झकझोरें अपने अंदर व्याप्त ईश्वर का आह्वान करो। स्वामी जी कहते थे कि में भविष्य को नहीं देखता हूं ना ही उसे जानने का प्रयास करता हूं किंतु एक दृश्य में अपने मन चक्षुओं से देख रहा हूं मातृभूमि एक बार फिर पुनः जाग गई है और अपने सिंहासन पर आसीन पहले से कहीं अधिक गौरव एवं वैभव से प्रदीप्त शांत और मंगलमय ईश्वर से उसकी पुनः प्रतिष्ठा की घोषणा समस्त विश्व में करो अपने दिन दुखी स्वदेश वासियों के प्रति उनका प्रेम सागरमय अथाह था। स्वामी विवेकानंद जी का वह संदेश आज भी प्रासंगिक है कहो बंधुओं नग्न भारतवासी, अनपढ़ भारतवासी, चांडाल भारतवासी मेरा भाई है जोर से पुकार कर कहो कि भारत के देवी देवता मेरे ईश्वर हैं भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है और रात दिन कहते रहो हे गौरी नाथ हे जगदंबे मेरी दुर्बलता और का पुरुषत्व को दूर कर दो मां मुझे मनुष्य बनाओ। स्वामी जी वास्तव में आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के जागरण कर्ता थे एवं भारतीय क्रांति के अग्रदूत थे ।

सदियों की दासता के कारण आत्माभिमान विहीन भारत को स्वामी जी ने उसकी मति एवं शक्ति का एहसास करा कर भारतवासियों को दिग्विजयी भारत बनाने के लिए प्रेरित किया । भंवर में फंसे भारत को राह दिखाने का काम स्वामी जी ने किया है, 4 जुलाई 1902 को ध्यान करते हुए उन्होंने महासमाधि ले ली बेलूर में गंगा जी के किनारे उनका अंतिम संस्कार किया गया यद्यपि आज लौकिक रूप में स्वामी जी हमारे बीच में नहीं है परंतु उनके द्वारा दिखाया गया मार्ग पर चलते हुए भारत पुनः विश्व का सिरमौर बनेगा इसका आभास आज भारत के जनमानस के बीच दिखाई दे रहा है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तत्कालीन सरसंघ चालक कुप. सी. सुदर्शन ने वर्ष 2000 में अपने एक भाषण में स्वामी विवेकानंद के द्वारा 1895 में उनके गुरु भाइयों को लिखे पत्र का उल्लेख करते हुये कहा था कि स्वामी विवेकानंद ने उस पत्र में गुरु भाइयों को लिखा है कि 1836 में जब स्वामी रामकृष्ण परमहंस का जन्म हुआ तो स्वर्ण युग का प्रारंभ हुआ,सुदर्शन जी ने ऋषि अरविंद को उद्धृत करते हुये कहा कि ऋषि अरविंद ने कहा है युग संधि का काल 175 वर्ष का होता है सुदर्शन जी ने कहा कि 1836 में 175 जोड़ें तो 2011 होता है, 2011 से भारत का भाग्य सूर्य सम्पूर्ण विश्व में चमकना शुरू हो जायेगा भारत सम्पूर्ण विश्व को विश्व बंधुत्व का संदेश देकर एकता के सूत्र में गूंथने का प्रयत्न करेगा।

वर्ष 2014 से भारत उस दिशा में चल पड़ा है,वर्तमान का भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है, वह निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद के स्वप्न की पूर्ति कर रहा है। 15 अगस्त 2022 के स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण में अमृत काल के पाँच संकल्पों को हम स्वामी विवेकानंद के विचारों और प्रेरणा से भी जोड़ कर देख सकते हैं।

पहला संकल्प 'विकसित भारत' - अमेरिका से लौटकर स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों से आह्वान करते हुए कहा था- नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भूँजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से, निकल पडे झोंपड़ियों से, जंगलों से, पहाड़ों से, पर्वतों से और खेत-खलियानों से औरपुनः भारत माँ को विश्वगुरु के पद पर आसीन कर दे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का भी मानना यही है कि जनभागीदारी और 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र से ही हम विकसित भारत के महान लक्ष्य को पूरा करेंगे।

दूसरा संकल्प 'गुलामी से मुक्ति'- 1897 में स्वामी विवेकानंद से किसी ने पूछा, स्वामी जी मेरा धर्म क्या है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि गुलाम का कोई धर्म नहीं होता, अगले 50 वर्षों तक सिर्फ भारत को गुलामी से आजाद कराना ही तुम्हारा धर्म है। स्वामी जी कहा करते थे- कि 'हम वो हैं, जो हमें हमारी सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिये कि आप क्या सोचते हैं, शब्द गौण हैं, विचार रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं' अर्थात् अपने मन मस्तिष्क में गुलामी का कोई भी विचार ना रहने दें। यही बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कही, हमारे मन के भीतर किसी भी कोने में गुलामी का एक भी अंश न रहे।

तीसरा संकल्प 'विरासत पर गर्व'- 11 सितंबर 1893 का उनका शिकागो भाषण इस बात का सर्वोत्तम उदाहरण है, जब भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, तब स्वामी विवेकानंद ने भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, विरासत, अध्यात्म और वैभवशाली इतिहास को अंग्रेजों की ही धरती पर गर्व के साथ बताया। उसके बाद एक बार पुनः भारत को मान-सम्मान मिला, गुलामी के कारण जो हीनता का भाव भारतीयों में आया था वह खत्म हुआ। मानो किसी नए सवेरे ने जन्म लिया। विश्व विजय की इस यात्रा से सभी भारतवासियों में एक नई ऊर्जा की लहर दौड़ पड़ी और भारत फिर से परम वैभव को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुआ। यही बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कही कि हमें अपने देश की विरासत पर गर्व होना चाहिए। हमें अपने सामर्थ्य पर भरोसा होना चाहिए। इसी विरासत ने भारत को कभी स्वर्ण काल दिया था। हमारी विरासत को विश्व मान रहा है। हम वे लोग हैं जो हर जीव में शिव देखते हैं। चौथा संकल्प 'एकता और एकजुटता'- एकता और एकजुटता पर स्वामी जी का विश्व को संदेश था कि- 'जल्द ही हर धर्म की पताका पर लिखा हो विवाद नहीं, सहायता; विनाश नहीं, संवाद; मतविरोध नहीं, समन्वय और शान्ति।', आज विश्व को आतंकवाद के खिलाफ नरेंद्र मोदी का भी यही संदेश है। स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों से कहा था कि इस बात के ऊपर तुम गर्व करो कि तुम एक भारतीय हो और अभिमान के साथ यह घोषणा करो कि हम भारतीय हैं और प्रत्येक भारतीय हमारा भाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के भाव को मन में समेटे हुए कहा कि हमें अपनी देश की विविधता को बड़े उल्लास से मनाना चाहिए। क्योंकि किसी देश की सबसे बड़ी ताक़त उस देश की एकता और एकजुटता में लीन होती है।

पाँचवा संकल्प 'नागरिकों का कर्तव्य'- स्वामी विवेकानंद द्वारा कृत 'कर्मयोग' नामक पुस्तक का चौथा अध्याय है- 'कर्तव्य क्या है'। जिसमें उन्होंने जीवन के हर कर्तव्य के बारे में विस्तार से बताया है, स्वामी जी ने उसमें लिखा है कि हमारा पहला कर्तव्य है कि हम अपने प्रति घृणा न करें। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का उल्लेख करते हुए कहा है कि जीवन के विभिन्न कर्तव्यों के प्रति मनुष्य का जो मानसिक और नैतिक दृष्टिकोण रहता है, श्रीमद्भगवद्गीता में उन सभी जन्मगत तथा अवस्थागत कर्तव्यों का बारम्बार वर्णन है। उसी प्रेरणा से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि नागरिकों का कर्तव्य देश और समाज की प्रगति का रास्ता तैयार करता है। यह मूलभूत प्रणशक्ति है। देश के मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी इससे बाहर नहीं हैं। बिजली की बचत, खेतों में मिलने वाले पानी का पूरा इस्तेमाल, केमिकल मुक्त खेती, हर कीमत पर भ्रष्टाचार से दूरी आदि हर क्षेत्र में नागरिकों की जिम्मेदारी और भूमिका बनती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वक्तृत्व भारत की स्वतंत्रता के अमृत काल के संकल्पों में स्वामी विवेकानन्द के ओजस्वी विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अपनी आध्यात्मिक शक्ति, गौरवपूर्ण संस्कृति-संस्कारों से ओतप्रोत अद्भुत सामर्थ्य, वैश्विक शांति और सौहार्द के लिए वसुधैव कुटुम्बकम के भारतीय दर्शन और मानव कल्याण की प्रेरणा देने वाले सनातन धर्म के कारण ही भारत विश्वगुरु की प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिक यात्रा और भारत का वैश्विक जागरण

यह भारत राष्ट्र का वह कालखंड था, जब विदेशी इस पुण्यभूमि को केवल अज्ञानवश या अपने पूर्वाग्रहों के कारण 'साँप-बिच्छुओं की धरती' कहकर अपमानित करते थे। अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आदेशानुसार अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले स्वामी विवेकानंद ने विश्व के समक्ष इस भारतभूमि का प्राचीन गौरवशाली इतिहास, परंपरा, हिंदू धर्म और यहां की संस्कृति को लेकर दुनिया के सामने यह स्पष्ट करना आवश्यक किया है कि भारतभूमि का इतिहास अत्यंत प्राचीन,गौरवशाली और संस्कृति से समृद्ध है। हमारी परंपराएँ, हिंदू धर्म तथा सांस्कृतिक मूल्यों की जड़ें हजारों नहीं, लाखों वर्षों पुरानी हैं। जिन धर्मों की चर्चा आज के संदर्भ में की जाती है, वे अपेक्षाकृत नवीन हैं,जबकि सनातन हिंदू धर्म एक चिरंतन जीवन दर्शन है, जो मानवता, करुणा और सेवा को सर्वोपरि मानता है। यह धर्म केवल पूजा-पद्धतियों का नाम नहीं, अपितु एक जीवनशैली है - जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना समाहित है। अतः विश्व के समक्ष भारत की असली पहचान, इसकी आध्यात्मिक परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना आज की आवश्यकता है।

पुण्यतिथि विशेष

अमित राव पवार

लेखक साहित्यकार हैं।

क भी-कभी हम अपनी सही बातों को भी समाज के समक्ष नहीं रख पाते या तो हमारे पास उचित मंच या फिर हम अच्छे वक्ता की भांति समाज को संदेश न दे पाए जिससे कि सही और मूल्यवान संदेश भी लोगों के समक्ष पहुंचने में असमर्थ दिखाई देता है। यह भी आवश्यक नहीं की जो लिख सकता हो,वह अच्छा वक्ता हो,और जो अच्छा वक्ता हो,ये आवश्यक नहीं कि वह सुंदरता से लिख सकता हो ऐसी अनेकों बातों का एक साथ समावेश होना अपने आप में महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है किंतु ईश्वर समाज के सकारात्मक संदेशों को पहुंचाने के लिए किसी न किसी रूप में अवतरित होकर उसे मूर्तरूप देता है। ऐसे ही जनकल्याण के अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संदेशों को विश्व प्रसिद्ध शिष्य स्वामी विवेकानंद ने जन-जन तक अपनी प्रखर वाणी के माध्यम से पहुंचाया तथा गुरु के प्रति अपनी निष्ठा व समर्पण भाव को प्रकट किया।

यह भारत राष्ट्र का वह कालखंड था, जब विदेशी इस पुण्यभूमि को केवल अज्ञानवश या अपने पूर्वाग्रहों के कारण 'साँप-बिच्छुओं की धरती' कहकर अपमानित करते थे। अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आदेशानुसार अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले स्वामी विवेकानंद ने विश्व के समक्ष इस भारतभूमि का प्राचीन गौरवशाली इतिहास,परंपरा,हिंदू धर्म और यहां की संस्कृति को लेकर दुनिया के सामने यह स्पष्ट करना आवश्यक किया है कि भारतभूमि का इतिहास अत्यंत प्राचीन,गौरवशाली और संस्कृति से समृद्ध है। हमारी परंपराएँ, हिंदू धर्म तथा सांस्कृतिक मूल्यों की जड़ें हजारों नहीं, लाखों वर्षों पुरानी हैं। जिन धर्मों की चर्चा आज के संदर्भ में की जाती है, वे अपेक्षाकृत नवीन हैं,जबकि सनातन हिंदू धर्म एक चिरंतन जीवन दर्शन है, जो मानवता, करुणा और सेवा को सर्वोपरि मानता है। यह धर्म केवल पूजा-पद्धतियों का नाम नहीं, अपितु एक जीवनशैली है – जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना समाहित है। अतः विश्व के समक्ष भारत की असली पहचान, इसकी आध्यात्मिक परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना आज की आवश्यकता है।

अपने गुरु श्री परमहंस के संदेशों को जन-जन तक,देश के कोने-कोने तक पहुँचाने के उद्देश्य से ही मानो ईश्वर ने नरेंद्रनाथ दत्त को इस धरती पर भेजा हो – जो आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के रूप में संपूर्ण विश्व में भारत की आध्यात्मिक चेतना के दूत बने। एक तेजस्वी,हृष्ट-पुष्ट युवा संन्यासी जब शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में खड़ा होता है, तो केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की आत्मा बोलती है।विवेकानंद ने विश्व के समक्ष गर्व से कहा – 'हम उस परंपरा के वाहक हैं, जो संसार में कहीं और दृष्टिगोचर नहीं होती। हम उस संस्कृति से आए हैं, जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है – की भावना जन्म लेती है।' उनका स्वर, उनका आत्मविश्वास,और उनका विचार केवल एक भाषण नहीं,बल्कि भारत की आध्यात्मिक पहचान की पुनः उद्घोषणा थी। यह भावना निहित जिसका अर्थ है कि पूरी पृथ्वी एक परिवार है। स्वामी विवेकानंद का विश्व को भारत के प्रति मुख्य संदेश यह था कि भारत की आध्यात्मिक विरासत और संस्कृति,विशेषकर सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का संदेश, दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत का उत्थान न केवल भारत के लिए,बल्कि पूरे विश्व के लिए हितकारी होगा। स्वामी विवेकानंद ने संपूर्ण विश्व में भारतमाँ का मान बढ़ाया,सर गर्व से ऊंचा किया। सैकड़ों वर्ष पूर्व ऐसा कोई आया ओर न ही आगे शताब्दियों तक कोई दिखाई दे रहा है। 'रविंद्रनाथ टैगोर कहते है कि भारत को जानना है तो विवेकानंद को जानना आवश्यक है आपको संपूर्ण भारत उनमें दिखाई देगा।'

स्वामी विवेकानंद में इतनी विलक्षण ऊर्जा, ओज और तेज था कि जब वे बोलना आरंभ करते, तो श्रोता

उनके शब्दों में ऐसे डूब जाते कि समय का भान ही नहीं रहता। उनके वक्तृत्व में ऐसा आत्मिक आकर्षण था कि सुबह से शाम और शाम से रात कब बीत जाती – यह न वक्ता को ज्ञात होता था, न ही श्रोताओं को। उनकी वाणी में केवल ज्ञान नहीं, अपितु आत्मा की गूंज और भारत की सनातन संस्कृति का स्वर सुनाई देता था। वे बोलते नहीं थे, जैसे भारतवर्ष की चेतना स्वयं मुखर हो उठती थी। उन्होंने भारत के सम्मान को बढ़ाने के लिए अमेरिका में विश्व सर्वधर्म सभा सम्मेलन में एक छोटे से अवसर के माध्यम से रातों-रात प्रसिद्ध पाई ऐसे प्रखर वक्ता ने भारत और विश्व के समक्ष सही मंचों के साथ यहां की संस्कृति से जनमानस को अवगत करवाया तथा समाज के लोगो को ज्ञात करवाते हुए उन्होंने समय-समय पर अंधभक्ति पर भी करारा प्रहार किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में समझाया कि कोई कितना ही महान क्यों न हो, बिना विचार, बिना विवेक के–अंधों की तरह उसके पीछे चलना मूर्खता है। उन्होंने चेताया कि केवल आस्था ही पर्याप्त नहीं होती, जब तक हमारी श्रद्धा विवेक और सोच-समझ पर आधारित न हो, तब तक किसी के भी पीछे आँख मूंदकर चलना आत्मविनाश की ओर ले जाता है।

आज के समय में भी कुछ ऐसा ही परिदृश्य देखने को मिल रहा है – लोग बिना सोच-विचार के किसी के पीछे चल पड़ते हैं और जब बहुत कुछ खोने के बाद सत्य का आभास होता है, तब केवल पछतावा शेष रह जाता है। विवेकानंद ने कहा था – 'श्रद्धा हो, लेकिन साथ में विवेक भी हो। जो मनुष्य अपने विचारों पर स्वयं मंथन नहीं करता, वह दूसरों की सोच का गुलाम बन जाता है।' उन्होंने भी परमहंस जी को गुरु बनाने के पहले अनेकों बार उन्हें जांचा पर रामकृष्ण तो परमहंस थे वे सब जानते थे,विवेक का जन्म क्यों और किस उद्देश्य के लिए हुआ है। दोनों ही एक दूसरे के लिए आए थे यह उनका जीवन का हमारे प्रति संदेश है कि अंधों की भीड़ में हमें स्वयं अंधा नहीं बनना चाहिए। वर्तमान समय की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हम अपने सोचने-समझने की शक्ति को दरकिनार कर, किसी तीसरे के कहे अनुसार न केवल निर्णय लेने लगते हैं, बल्कि उन पर आँख मूंदकर विश्वास भी कर बैठते हैं। यह प्रवृत्ति न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि सामाजिक और नैतिक क्षति का कारण भी बनती है। स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिक यात्रा और भारत का वैश्विक जागरण पूरी दुनिया ने स्वीकार किया।

हमें चाहिए कि हम सदैव वही कार्य करें,जो हमारे विवेक, अनुभव और आत्म-चिंतन से निकले हों। अंधानुकरण की प्रवृत्ति से बाहर निकलकर स्वतंत्र सोच को अपनाएँ। तभी हम सच्चे अर्थों में जागरूक नागरिक और जाग्रत आत्माएँ बन पाएँगे। जिससे लोककल्याण जुड़ा हो, देश को लाभ पहुंचे, हमारा जीवन सकारात्मकता से भरा हो। 25 वर्ष की आयु में जिन्होंने अपना घर त्यागकर गुरु के बताए गए मार्ग पर चलकर भारत माता का दर्शन विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया वह कोई साधारण व्यक्ति का कार्य नही हो सकता जिसे गुरु भी उच्च कोटी का मिला। 4 जुलाई 1902 को अपनी 39 वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानंद का देवलोकगमन हुआ। पूरे विश्व को भारत के ज्ञान,धर्म,संस्कृति के बारे में अवगत करवाने वाले और पूरी दुनिया को अध्यात्म जगत का वास्तविक ज्ञान और आधार देने वाले स्वामी विवेकानंद जी ने अपने चिंतन,भाषणों और जीवन के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि भारत का धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ज्ञान केवल एक देश की धरोहर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य निधि है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि यह ज्ञान विश्व से विलुप्त हो जाए,तो संसार एक दिशाहीन, मूल्यहीन और आध्यात्मिक रूप से अनाथ स्थिति में पहुँच जाएगा। भारत का यह सनातन दर्शन – जिसमें करुणा, सहिष्णुता, आत्मानुभूति और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना निहित है – ही विश्व को एक सच्चा मार्गदर्शन दे सकता है। विवेकानंद जी के शब्दों में,भारत की आत्मा में ही विश्व का कल्याण निहित है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत

बैतूल। बैतूल मंडी में कार्यरत कंप्यूटर ऑपरेटर की बुधवार रात इंदौर हाईवे पर खेड़ी के पास सड़क हादसे में मौत हो गई। गढ़ा गांव निवासी सुनील परते (30) को किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। पुलिस मामले की जांच कर रही है। लक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी के संचालक रोहित अग्रवाल ने बताया कि रात को एंबुलेंस से फोन आने पर हादसे का पता चला। सुनील रात को बाइक से गांव लौट रहा था। खेड़ी स्थित वाइन शॉप के पास हाइवे पर किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। राहगीरों ने एंबुलेंस को सूचित किया और घायल सुनील को जिला अस्पताल भेजा गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

डिवाइडर से टकराई बाइक, युवक की मौत, साथी घायल

बैतूल। बैतूल-इंदौर हाईवे पर देवगांव के पास बुधवार देर रात एक बाइक डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसका साथी घायल हो गया। दोनों मजदूरी से लौट रहे थे। घायल को इलाज के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। मृतक की पहचान हरिराम लक्ष्मण धुर्वे (20) के रुप में हुई है, जो झल्लार थाना क्षेत्र का रहने वाला था। वह अपने दोस्त दिनेश के साथ हरदा से मजदूरी कर लौट रहा था। देवगांव के पास उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हरिराम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दिनेश दूर जा गिरा और घायल हो गया। हादसे के बाद दिनेश ने हरिराम के पिता को फोन कर घटना की जानकारी दी और एम्बुलेंस बुलवाई। दोनों को जिला अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने हरिराम को मृत घोषित कर दिया। दिनेश को प्राथमिक उपचार के बाद आज छुट्टी दे दी गई। जिला अस्पताल में पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

देवशयनी, हरिशयनी एकादशी व्रत पूजन अनुष्ठान समारोह 6 को होगा

बैतूल। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के तत्वाधान में देवशयनी, हरिशयनी एकादशी व्रत पूजन अनुष्ठान समारोह का आयोजन 6 जुलाई दिन रविवार को तुलसी भवन विनोबा नगर बैतूल में शाम 6 बजे से आयोजित की जाएगा। प. पुष्पेंद्र तिवारी ने बताया देवशयनी एकादशी को हरिशयनी, पदमा, आषाढ़ी एकादशी भी कहा जाता है। इस एकादशी तिथि से भगवान विष्णु क्षीरसागर में विश्राम करने के लिए चले जाते हैं। करीब 4 महीने के लिए भगवान विष्णु आराम करते हैं इसलिए इसे चातुर्मास भी कहा जाता है। इस दौरान कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है। इस दौरान धरती का संचालन भगवान शिव के रुद्र अंश करते हैं। देवशयनी एकादशी व्रत के पूजन से मनोकामनाओं की पूर्ति के साथ सुख समृद्धि की प्राप्ती होती है।

5 किमी की पदयात्रा कर मां को चढ़ाई चुनरी

बैतूल। मां ताप्ती की महिमा अद्भुत है अनंत है। कई लोग वर्षों से मां ताप्ती की सेवा निस्वार्थ भावना से कर रहे है और करते रहेंगे। बोरपानी से ताप्ती घाट (कोलगांव) तक सूर्यपूत्री मां ताप्ती के जन्मोत्सव पर 5 किमी चुनरी पदयात्रा ताप्ती कलश लकर, गांव में पूजन पाठ किया गया। इस मौके पर पूर्व जिला संयोजक बजरंग दल

श्याम टेकपूरे ने बताया कि ग्राम में सभी ने घरों के सामने रंगोली, साज सज्जा कर यात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया। चुनरी पदयात्रा 108 मीटर लम्बी निकालकर, ढोल बाजे के साथ निकाली गई। पदयात्रा में बच्चे, बुढ़े, महिला,पुरुष बड़ी संख्या में मौजूद थे। यात्रा का समापन ताप्ती घाट कोलगांव में आरती और भोजन प्रसादी वितरण के साथ हुआ। राकेश भरतपुरे, उमेश मालवी, अशोक भरतपुरे, गोपाल टेकपुरे, डॉ.गोकूल भरतपुरे, उमेश साहू, श्याम टेकपुरे, राम भरतपुरे, आशीष भरतपुरे, चेतन भरतपुरे, गोपाल टेकपुरे, कंचन भरतपुरे, सरिता भरतपुरे, लीला भरतपुरे, सुनील उइके, शत्रुघन युवने, राजेश नागले, सुखनंदन युवने, मीरा उइके, हीरा उइके, गीता उइके, पार्वती नागले, रंगो बाई, बलदेव उइके आदि मौजूद थे।

पीडब्ल्यूडी विभाग ने किया पौधारोपण

बैतूल। पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह की पहल पर बैतूल में भी पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा वृहद स्तर पर पौधारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि पौधारोपण आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुरक्षित, और समृद्ध भविष्य देने का हमारा संकल्प है। कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग श्रीमती प्रीति पटेल के नेतृत्व में विभाग की पूरी टीम ने

पौधारोपण महाअभियान अंतर्गत सड़कों के किनारे, रेस्ट हाउस परिसरों और विभागीय कार्यालयों में 1200 पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर बैतूल एसडीओ डीएस परमार, मुलताई एसडीओ बीआर करमकार, भैंसदेही एसडीओ अखलेश कवड़े, चिचोली एसडीओ आयुशी पांडे सहित स्टाफ पौधारोपण कार्यक्रम में शामिल हुआ। इसके अलावा जिले के चारों उपसंभागों में भी पौधारोपण किया गया। श्रीमती पटेल ने अभियान की सराहना करते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण अत्यंत आवश्यक है और इस दिशा में आम लोगों को भी आगे आना चाहिए। विभाग द्वारा लगाए गए पौधों में नीम, पीपल, आम, गुलमोहर, करंज जैसे पर्यावरणीय दृष्टि से उपयोगी और छायादार प्रजातियों को प्राथमिकता दी गई। कार्यपालन यंत्री प्रीति पटेल ने बताया कि पौधों के संरक्षण और उनके पोषण की भी पूरी व्यवस्था सुनिश्चित की गई है, जिससे ये पौधे भविष्य में बडे होकर पर्यावरण के लिए उपयोगी बन सकें। विभाग ने संकल्प लिया है कि आगामी दिनों में भी पौधारोपण कार्यक्रम सतत रूप से आयोजित किए जाएंगे।

एक पखवाड़े की बारिश से ही डामर सड़कों की हालत खराब

सड़क पर गड्ढों के कारण वाहन चालक परेशान

बैतूल। मानूसन को आए अभी एक पखवाड़ा ही हुआ है और बैतूल शहर में मात्र 78.4 मिमी बारिश दर्ज की गई, इतनी ही बारिश में सड़कों की हालत खराब हो गई है। कई सड़के गड्ढों में तब्दील हो चुकी है। जिस पर वाहन चलाना तो दूर पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। इन गड्ढों में बारिश का पानी जमा होने से रात्रि के समय यह गड्ढे नजर नहीं आते और वाहन चालक अनियंत्रित होकर गिर रहे है। यह हाल शहर के वार्डों की सडक़ों के ही नहीं, अपितु प्रमुख चौराहों पर भी सडक़ों में गड्ढे नजर आ रहे हैं। वार्डों में सड़क़ निर्माण के टेंडर लगे होने के बावजूद ठेकेदारों द्वारा समय पर निर्माण शुरू नहीं किया गया। जिसके कारण बारिश में अब वाहन चालकों के साथ राहगीरों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल बारिश में सड़क़ों की खस्ता हालत का मुख्य कारण पानी निकासी के इंतजाम नहीं होना हैं। जिसके कारण सडक़ पर पानी भर जाता है। इस वजह से यह सड़क़ महज छह माह ही टिकती है और इसके बाद सडक़ पर गड्ढे हो जाते हैं। हालांकि अब जितनी भी प्रमुख सडक़ें बनाई जा रही हैं उनमें नगरपालिका द्वारा नाली निर्माण भी कराया जा रह हैं, लेकिन पानी निकासी के लिए ठीक तरह से इंतजाम नहीं किए जा रहे हैं।

गड्ढों के कारण सड़क पर चलना मुश्किल- खस्ताहाल सडक़ से आमजनता परेशान है। बारिश में गड्ढों के कारण सड़क़ पर चलना मुश्किल हो गया है। दुर्घटना की संभावनाएं बढ़ गई है। लेकिन इन गड्ढों में डस्ट या मुरम डालकर समतल तक नहीं किया है। गंज क्षेत्र में व्यापारियों ने खुद गड्ढे भरे, वहीं कॉलेज चौक पर सडक़ पर बने गड्ढे वैसे ही है। इससे रोजाना वाहन चालकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कई जगह गिट्टी ने डामर छोड़ दिया है, लेकिन अन्य विकल्प नहीं होने से लोग इसी खस्ताहाल सडक़ पर चलने को विवश हैं, जबकि इस सडक़ पर प्रतिदिन हादसे हो रहे है। कभी लोग चोटिल हो जाते है तो कभी गंभीर रूप से घायल होकर अस्पताल पहुंच रहे है।

प्रतिदिन सैकड़ों लोगों का आना-जाना - शहर की मुख्य सडक़ों पर प्रतिदिन हजारों वाहनों का आवागमन होता है। दिन में तो वाहन चालक जैसे-तैसे सडक़ के गड्ढों से बच भी जाते है, किन्तु रात्रि में गड्ढे नजर नहीं आने से कई बार वाहन चालक गिरकर चोटिल हो चुके है। जागरूक नागरिकों का कहना है कि शहर में सडक़ों का निर्माण तो कराया जाता है, लेकिन यह सडक़ चंद सालों में ही खराब हो जाती है। जिसके बाद इनकी मरम्मत तक नहीं होगी है। मरम्मत के अभाव में सडक़ों पर बने गड्ढों का आकार बढ़ता है और सडक़ जल्द ही खराब हो जाती है। वहीं वाहन चालक सडक़ पर बने गड्ढों से बचने के चक्कर में दुर्घटनाग्रस्त होकर चोटिल होते है। गड्ढों के वजह से वाहनों के टकराने की भी घटनाएं अक्सर सामने आती है। बार-बार वाहन गड्ढे में जाने से वाहन में टूट-फूट हो रही है। जिससे चालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

बारिश में डूब जाती है सड़कें - सडक़ पर पानी निकासी के इंतजाम नहीं होने से बारिश के दौरान सडक़े डूब जाती है। गंज क्षेत्र में रेलवे स्टेशन के पास बारिश में सडक़ का यहीं हाल रहता है। इसके अलावा शंकर वार्ड में फिल्टर प्लांट रोड भी पूरी तरह खराब हो चुकी है। हालांकि सडक़ का टेंडर हो चुका है। लोगों का कहना था कि पिछले साल तो डस्ट डालने से थोड़ी राहत थी, लेकिन अब पूरी सडक़ उखड़ गई है। जिससे परेशानी हो रही है। वहीं कॉलेज चौक पर बीच चौक पर सडक़ की हालत खस्ताहाल हो गई है। यहां भी चौक का चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण होना है, लेकिन इस कार्य में अभी समय लगेगा। लेकिन नपा ने बारिश के पूर्व इन गड्ढों को नहीं भरवाया गया है। जिसके कारण बारिश का पानी इन गड्ढों में थम गया है और अब आम लोगों के लिए मुसीबत खड़ी कर रहा है।

इनका कहना है -

डस्ट डालकर गड्ढे भरवाने का कार्य शुरू कर दिया है। अभी गेंदा चौक क्षेत्र में गड्ढे भरे जा रहे है। इसके पश्चात अन्य स्थानों पर भी गड्ढे भरे जायेगे। जिससे बारिश के दौरान राहगीरों को सडक़ों पर चलने में परेशान न हो। इसके अलावा सडक़ों पर से पानी निकासी की भी व्यवस्था की जायेगी।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

फसल बीमा के प्रति किसानों को जागरूक करने नुक्कड़ नाटक का आयोजन

बैतूल। बैतूल जिले में खरीफ फसलों का बीमा 1 जुलाई से प्रारंभ हो गया है। जिसके क्रियान्वयन के लिए जिले के समस्त विकासखण्डो में फसल बीमा सप्ताह 1 से 7 जुलाई तक चलेगा। इसके साथ ही एसबीआई जनरल इंश्यूरेंस कंपनी द्वारा सभी तहसील में 3 से 6 जुलाई तक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। बैतूल तहसील के बडोरा कृषि उपज मंडी में गुरूवार को नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर किसानों को जानकारी दी गई कि फसल बीमा करवाने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित है प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करने की इच्छुक अऋणी किसान अपनी निकटतम बैंक शाखा, सहकारी समिति, जन सेवा केंद्र (सीएससी) एवं कृषक स्वयं भी राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड सकते हैं। अऋणी कृषकों को फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज-बैंक पासबुक, फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बही एवं बटाईदार किसान या किराए पर ली गई, भूमि के लिए मलिक द्वारा शपथ पत्र दिया जाना अनिवार्य है।

मुलताई रेलवे स्टेशन पर अमरावती-जबलपुर ट्रेन के स्टॉपेज की मांग

विभिन्न मुद्दों को लेकर सांसद और कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। मुलताई तहसील के ग्राम ताईखेड़ा निवासी विजय धाकड़ ने मुलताई रेलवे स्टेशन पर अमरावती-जबलपुर ट्रेन के ठहराव, गरीब परिवारों को 5 किलो से बढ़ाकर 20 किलो प्रति व्यक्ति अनाज देने सहित अन्य मुद्दों को लेकर अपनी आवाज बुलंद की है। इस संबंध में श्री धाकड़ ने गुरुवार को सांसद और कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है। उनका का कहना है कि मुलताई एक धार्मिक, शैक्षणिक और व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कस्बा है। यहां से बड़ी संख्या में लोग अमरावती, नागपुर, छिंदवाड़ा, जबलपुर जैसे शहरों में आते-जाते हैं। यह ट्रेन क्षेत्र के लोगों के लिए अत्यंत आवश्यक है, लेकिन स्टेशन पर इसका स्टॉपेज न होने से यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में मुलताई रेलवे स्टेशन पर अमरावती-जबलपुर ट्रेन के स्टॉपेज होना जरूरी है। श्री धाकड़ ने मप्र में विकलांग, वरिष्ठ नागरिकों और वृद्धजनों की पेंशन 600 से बढ़ाकर 3600 रूपए प्रतिमाह किए जाने की मांग की है। श्री धाकड़ ने मप्र में वरिष्ठ नागरिकों, विकलांगों और गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले जरूरतमंद परिवारों को मिलने वाले मुफ्त अनाज की मात्रा बढ़ाकर 5 किलोग्राम अनाज की जगह प्रत्येक पात्र व्यक्ति को 20 किलोग्राम अनाज प्रति माह दिए जाने की मांग की है।

प्रदेश की सुख-समृद्धि के संकल्प के साथ सांसद बंटी साहू की पदयात्रा पहुंची चिखली

कॉलेज परिसर में किया पौधारोपण, सुरक्षा का दिलाया संकल्प

बैतूल। प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली के संकल्प के साथ छिंदवाड़ा-पांढुर्णा सांसद बंटी विवेक साहू द्वारा छिंदवाड़ा से दादाजी धूनी वाले धाम, खंडवा

के लिए निकाली गई पदयात्रा गुरुवार को बैतूल जिले के ग्राम चिखली पहुंची। यात्रा के ग्राम देवगांव आगमन पर एसडी कॉलेज द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के संस्थापक सदस्यद्वय श्री रेवती प्रसाद सरले एवं श्री मदन महाजन, संस्था अध्यक्ष डॉ. ललित सरले तथा संचालक डॉ. आशीष महाजन ने सांसद बंटी साहू एवं अन्य पदयात्रियों का पारंपरिक विधि-विधान से स्वागत करते हुए पवित्र निशान की पूजा-अर्चना की। इसके पश्चात कॉलेज परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहां सांसद श्री साहू ने पौधा लगाकर सभी को पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि पदयात्रा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक संदेश देने का अवसर भी है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता और प्रदेश की खुशहाली के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सक्रिय योगदान देना चाहिए। उल्लेखनीय है कि छिंदवाड़ा, पांढुर्ना सहित पूरे प्रदेश की जनता की सुख, समृद्धि और खुशहाली के लिए सांसद बंटी विवेक साहू छिंदवाडा से पांढुर्ना होते हुए खण्डवा तक 411 किलोमीटर की पदयात्रा कर रहे है। यह सांसद श्री साहू की चौथी और सबसे लंबी पदयात्रा है। इससे पहले वे जामसांवली तक 61 किमी, महादेव तक 34 किमी और रामेश्वर धाम तक 22 किमी की पदयात्रा कर चुके हैं।

बीज अंकुरित नहीं होने से किसानों की फसल बर्बाद

जिला कांग्रेस कमेटी ने आमला तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन, प्रति हेक्टेयर 18 हजार मुआवजे की मांग

बैतूल। आमला तहसील में कृषि विभाग के माध्यम से किसानों को वितरित किया गया सोयाबीन का बीज अंकुरित नहीं हुआ, जिससे किसानों की खरीफ की फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई है। गुरुवार को जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष छन्नू बेले के नेतृत्व में किसानों ने आमला तहसीलदार को ज्ञापन सौंपकर बीज अंकुरित नहीं होने से किसानों को फसल मुआवजा प्रति हेक्टेयर 18 हजार की राशि दिए जाने तथा कंपनी मालिक पर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। ज्ञापन के माध्यम से जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष श्री बेले ने बताया जिले के आमला ब्लॉक में किसानों को बीज वितरित किया गया था, लेकिन बीज की गुणवत्ता इतनी खराब निकली कि जमीन में बुवाई के बाद भी अंकुरण नहीं हुआ। किसानों का कहना है कि यह बीज उन्नत उत्पादन और किसान हित में वितरित किया था, लेकिन अब यह बीज किसानों के लिए मुसीबत बन गया है। फसल पूरी तरह चौपट होने से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है। इसकी जानकारी लगने पर कृषि विभाग के अधिकारी ने सिर्फ पंचनामा तैयार किया है, मुआवजा संबंधी कोई कार्रवाई नहीं की गई। किसानों का आरोप है कि कृषि विभाग द्वारा बिना गुणवत्ता जांच के किसानों को जो बीज वितरित किया गया, वही इस नुकसान की मुख्य वजह है। उन्होंने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए दोषियों पर सख्त कार्रवाई और किसानों को त्वरित राहत देने की मांग की है। प्रभावित किसानों का कहना है कि यदि प्रशासन जल्द मुआवजे और दोषियों पर कार्यवाही नहीं की गई तो आंदोलन किया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष छन्नू बेले विश्राम उईके, ओम दास शेषकर, देवराम चौकीकर, दिलीप रावत, रमेश दामले, भोजराज, महेश, धनलाल नागले, सुखदेव नारे, रामदयाल राठौर, दिलीप रावत, दिनेश, देवराव चौकीकर सहित अन्य किसान शामिल है।

ताप्ती जन्मोत्सव पर महाआरती से जगमगा उठा आरती घाट

पूर्व कैबिनेट मंत्री पांसे सहित अनेक अतिथियों ने लिया भाग

बैतूल / मुलताई। ताप्ती आरती घाट पर ताप्ती जन्मोत्सव पर प्रतिवर्ष होने वाली महाआरती संपन्न हुई, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने हाथों में आरती थाल लेकर मां ताप्ती की आरती उतारी। हजारों हजार हाथों में सजे मां ताप्ती आरती थाल और थालो में जलते दीप अनुपम छटा बिखेर रहे थे, जिसे देखने के लिए उमड़ी लाखों की भीड़ इस अनुपम दृश्य की गवाह बनी। पंडित हनुमान प्रसाद दुबे द्वारा महाआरती की विधि पूर्ण कराई। ताप्ती सेवा मंडल द्वारा आयोजित इस महा आरती में पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे, कांग्रेस उपाध्यक्ष संजय यादव, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुप्रिया यादव, पूर्व मध्य प्रदेश रोजगार निर्माण बोर्ड अध्यक्ष हेमंत विजय राव देशमुख, नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर ने मां ताप्ती की आरती कर मान्यता अनुसार पुण्य फल की प्राप्ति की। ताप्ती जन्म उत्सव पर ताप्ती कुंड परिक्रमा क्षेत्र दुल्हन की तरह सजाया गया था जगह-जगह बैलून पुष्प और लाइटिंग व्यवस्था के चलते ताप्ती परिसर अत्यंत आकर्षक दिखाई दे रहा था। जन्मोत्सव पर देर रात तक मां ताप्ती सरोवर पर दुग्ध अभिषेक करने वालों का ताता लगा रहा पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे ने भी मां ताप्ती की पूजा अर्चना कर ताप्ती सरोवर में मां ताप्ती का दुग्ध अभिषेक किया और अनेक भंडारा प्रसादी स्टालों से अपने हाथों से प्रसादी वितरण की ।

28 वर्षों से हो रही है मां ताप्ती सेवा मंडल की आरती

ताप्ती सेवा मंडल नगर का सबसे प्राचीन मां ताप्ती की सेवा से जुड़ा मंडल माना जाता है जिसने ताप्ती गेट, निर्माण, बाराद्वारी सुधार एवं मंदिरों घाटो के सुधार के साथ मां ताप्ती की महिमा को जन-जन तक पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज से 28 वर्ष पूर्व ताप्ती सेवा मंडल ने आरती घाट पर प्रतिदिन नियमित आरती एवं ताप्ती जन्म उत्सव पर भव्य महा आरती की आधारशिला रखी थी तब से लेकर अब तक ताप्ती तट पर नियमित प्रतिदिन मां ताप्ती की आरती की जाती है और ताप्ती जन्मोत्सव पर भव्य महा आरती का आयोजन होता है। आरती घाट के पुजारी हनुमान प्रसाद दुबे बताते हैं कि आज से 28 वर्ष पूर्व स्वर्गीय प्रदीप खंडेलवाल, तुकाराम कडुकार, अनिल अग्रवाल, स्वर्गीय भुरु मामा, कृष्णा साहू, सुरेश पवार आदि ने ताप्ती तट पर प्रतिदिन आरती के आधारशिला रखी थी तब से अब तक मां ताप्ती की आरती बगैर नागा हो रही है। यह हनुमान प्रसाद बताते हैं कि आरती की नियमितता बनाए रखने में दिक्कत तो अनेक आई किंतु मां ताप्ती के आशीर्वाद से आंधी हो या तूफान वर्षा हो या कोरोना किसी भी परिस्थिति में ताप्ती तट की आरती कभी नहीं रुकी।

मैदान में एआई

मनीष जैसल

लेखक स्वतंत्र पत्रकार और टिप्पणीकार हैं।

राष्ट्रीय खेल नीति 2025: मशीन की आँख से खेल

भारत में खेलों की परंपरा सदियों पुरानी है। किसी गाँव के धूल भरे अखाड़े से लेकर शहर की चमचमाती सिंथेटिक ट्रैक तक, हमारी सांझी स्मृति में पसीने की गंध और माटी की सोंधी खुशबू बराबर रची-बसी है। मगर पिछले कुछ बरसों में इस पारंपरिक दृश्य के सामने एक नयी रोशनी चमकी है, कॉल सेंटर जैसी चमकती स्क्रीन, अंगुलियों में लिपटी स्मार्ट-बैंड और कानों में गूँजती बायोफीड बैक के 'पिंग'। यह रोशनी यानी आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, जिसे हम संक्षेप में एआई कहते हैं, खेल मैदान में अपने क़दम जमा चुकी है। खिलाड़ी के शरीर का हर सूक्ष्म कम्पन अब डेटा है, जिसे एल्गोरिद्म पलक झपकते पढ़ लेते हैं। ताज़ा सरकार-प्रस्तावों 'इंडिया एआई मिशन और राष्ट्रीय खेल नीति 2025' ने इस बदलाव को संस्थागत जामा पहना दिया है। मैंने खेल प्रेमी के रूप में जब मैदान से बाहर बैठकर इन दस्तावेजों को पढ़ा, तो लगा मानो किसी पुराने किस्सागो को अचानक डिजिटल प्रॉम्पटर पकड़ाकर कहा गया हो कि वही कहानी अब नई लिपि में सुनाओ।

राष्ट्रीय खेल नीति 2025 दरअसल तीन बड़े वादों पर टिकी है। पहला, जनभागीदारी, मतलब हर बच्चे को कम से कम एक खेल से जोड़ना। दूसरा, उच्च प्रदर्शन, उद्देश्य साफ़ है कि 2036 के ओलंपिक तक भारत पदकों की दहलीज़ पर खड़े रहने के बजाय सीढ़ियाँ चढ़े। तीसरा, खेल उद्योग का विकास यानि खेल को करियर, बाज़ार और नवाचार का पूर्ण-कालिक इकोसिस्टम बनाना। इन तीनों वादों को गति देने के लिए नीति ने एआई को ईंधन मान लिया है; जैसे किसी रथ को तीन घोड़े खींच रहे हों और एआई उनकी लगाम थामे सारथी हो। स्कूलों में फिटनेस-डेटा एकत्र करना, राज्यों में खेल विज्ञान केंद्र खोलना और निजी क्षेत्र को कर-रियायत देकर इनोवेशन की राह चौड़ी करना । ये सब उसी विचार-श्रृंखला की कड़ियाँ हैं।

एआई की असली धमक हमें प्रशिक्षण के मैदान में सुनाई देती है। दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में अब कबड्डी खिलाड़ियों को 'स्मार्ट रीडर जैकेट' पहनाई जाती है। रेडर की कूद, मुड़ना, साँस की गति, यहाँ तक कि पैंतरे बदलते वक्त उसकी आँखों की सूक्ष्म झपक सब रिकॉर्ड होता है। लौटने के बाद कोच उसे दिखाते हैं कि किस पल बाएँ कंधे पर अधिक भार गया और क्यों दाँए कॉर्नर ने उसे पकड़ लिया। यह अजीब-सा लगता है कि मिट्टी के खेल की रणनीति अब सर्किट बोर्ड से निकल रही है, मगर परिणाम सामने हैं, रेडरों की सफल रेड औसत में सात प्रतिशत बढ़ी है। यही कहानी क्रिकेट, हॉकी और एथलेटिक्स के बारे में भी कही जा सकती है। लखनऊ की महिला हॉकी अकादमी में सेंसरयुक्त स्टिक से पता चला कि ड्रैग-फ्लिक के समय ज्योति सिंह की दाहिनी कलाई ज़रूरत से ज़्यादा घूमती है; एक हफ़्ते के भीतर सुधार आया और उसने एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी में निर्णायक गोल दाग दिया।

फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खेल शरीर का ही नहीं, मन का भी दंगल है। एल्गोरिद्म थकान का ग्राफ़ दिखाएगा, लेकिन हार की हूक या जीत का नशा वह नहीं नाप सकेगा। यही कारण है कि नीति में खेल मनोवैज्ञानिकों को अनिवार्य करने की बात है। कोच को यह समझना होगा कि लैक्टेट थ्रेशोल्ड के साथ-साथ खिलाडी पर सोशल-मीडिया ट्रोल का मानसिक दबाव भी शारीरिक क्षमता घटा सकता है। डेटा तभी सार्थक है जब उसकी व्याख्या में इंसानी करुणा शामिल हो।

चयन-प्रक्रिया में भी एआई ने बड़ा उलटफेर किया है। अब न तो एक दिन के ट्रायल की किस्मत ही सबकुछ तय करती है, न ही सिर्फ़ कोच की निजी पसंद। पूरे सीज़न का डेटा खिलाड़ी की निरंतरता और फिटनेस का सच सामने रख देता है। पारदर्शिता बढ़ी है यह अच्छी बात है। लेकिन सवाल यह भी उठता है कि सुदूर लाहौल-स्पीति से आने वाले लड़के के पास अगर सेंसर-युक्त जूते नहीं, तो उसका दौड़ का डेटा बनेगा ही कैसे? खतरा यह है कि पश्चिमी घाट के गाँव की धाविका तकनीकी अभाव के कारण चयन-सूची से बाहर रह जाएगी। इसलिए ज़रूरी है कि जिला स्तर पर 'ओपन-सोर्स' सस्ते सेंसर मुहैया कराए जाएँ, ताकि प्रतिभा और तकनीक के बीच आर्थिक खाई न रहे।

इधर एआई ने एक नया बाज़ार खोल दिया है 'स्पोर्ट्स टेक'। कहीं वर्चुअल रियलिटी में मुक्केबाज़ी का स्पैरिंग प्लेटफ़ॉर्म बन रहा है, कहीं बायोमैट्रिक रिकवरी ऐप हॉटकेक की तरह डाउनलोड हो रहा है। केपीएमजी की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत का स्पोर्ट्स टेक बाज़ार 18 फ़ीसदी वार्षिक दर से बढ़ रहा है और 2030 तक ढाई अरब डॉलर का हो जाएगा। नीति ने निजी निवेश को

उकसाने के लिए 50 फ़ीसदी पूँजीगत सब्सिडी का लालच दिया है। इस भूमिका में एआई उन युवाओं के लिए रोज़गार के दरवाज़े खोल देगा जो मैदान में नहीं, लैपटॉप के सामने बैठकर खेल को जीते हैं।

मगर बाज़ार के साथ जोखिम भी आते हैं। सबसे बड़ा खतरा डेटा गोपनीयता का है। खिलाड़ी के हार्मोन, हृदय गति, नींद और सोशल-मीडिया रूझान का मिश्रित डेटा अगर बीमा कंपनियों या सट्टेबाज़ी गैंग के हाथ लगा तो करियर तबाह हो सकता है। अभी जो डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन ऐक्ट आया है, वह खेल-विशिष्ट मानक तय नहीं करता। खेल मंत्रालय को तत्काल 'स्पोर्ट्स डेटा नैतिक संहिता' बनानी होगी, ताकि संवेदनशील आँकड़ों का इस्तेमाल पूर्व-अनुमति और एन्क्रिप्टेड ढाँचे में ही हो।

दूसरा खतरा एल्गोरिद्मिक के पूर्वाग्रह का है। अगर प्रशिक्षण-डेटा शहरों से आता है तो मशीनी सीख इसी ढाँचे को आदर्श मान लेगी। परिणाम यह कि छत्तीसगढ़ के बस्तर के लड़कों का पारंपरिक 'टुक्का-थ्रो' भाला फेंकने की अनूठी शैली त्रुटि समझी जाएगी, जबकि वह उनकी सशक्त कलाई की देन है। विविधता से परे डेटा लेना अपने-आप में भेदभाव है। इसी कारण नीति-निर्माताओं को डेटा-सेट में क्षेत्रीय, लिंग और सामाजिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना होगा।

तीसरी चुनौती कोचिंग के 'मानवीय कौशल' से जुड़ी है। दशकों की अनुभूति से प्रशिक्षक कभी-कभी ऐसा निर्णय लेते हैं जिसे डेटा नहीं पकड़ पाता। फुटबॉल के मैच में कोच ने देखा कि उसका स्ट्राइकर भले ही थका लग रहा हो, मगर प्रतिद्वंद्वी डिफ़ेंडर उससे भी ज़्यादा हाँफ रहा है; कोच ने स्ट्राइकर को रुके रहने दिया और मैच पलट गया। यदि उस क्षण एल्गोरिद्म का आदेश सुनते तो शायद बदलाव हो जाता और नतीजा अलग होता। इसीलिए ज़रूरी है कि अंतिम फ़ैसला इंसानी विवेक का ही रहे एआई सलाह दे, संचालक न बने।

दर्शक-अनुभव भी एआई से बदल रहा है। अब मैच के बीच-बीच में मोबाइल ऐप यह बता देता है कि अगले ओवर में 'विकेट लेने की संभावना' 31 फ़ीसदी है। रोमांच बढ़ा है, पर अनिश्चितता का जादू थोड़ा कम हुआ है। खेल का सौंदर्य अप्रत्याशित रिजल्ट में है। अगर हर गेंद, हर रेड, हर पेनल्टी-कार्नर का गणित पहले ही बता दिया जाए, तो दर्शक की हैरत को क्या होगा? इसलिए तकनीक लाते हुए रोमांच का स्वाभाविक तत्व बचा रहना चाहिए।

नीति का सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान ग्रास-रूट विकास का है। 'वन-डिस्ट्रिक्ट-वन-स्पोर्ट' मॉडल के तहत हर जिले को एक कोर-खेल चुनना है और वहीं एआई-समर्थित संसाधन पहुँचाने हैं। विचार बढ़िया है; पर इसके लिए बिजली, ब्रॉडबैंड और प्रशिक्षित टेक्नीशियन चाहिए। यदि आधारभूत ढाँचा नहीं पहुँचा, तो यह योजना केवल स्लाइड-डेक में चमकती रहेगी।

बात कोच और रेफ़री की 'पुनर्संस्करण' की करे तो राष्ट्रीय खेल नीति कहती है कि 50 हज़ार कोच-रेफ़री को डिजिटल सर्टिफ़िकेट दिया जाएगा। यह आसान नहीं। मुझे याद है एक वरिष्ठ हॉकी अंपायर जो आज भी काग़ज़ी स्कोर-शीट पर टिक-मार्क लगाते हैं; उन्हें लैपटॉप थमा देने भर से काम नहीं चलेगा। उनके अनुभव को सम्मान देते हुए धीरे-धीरे डिजिटल कौशल सिखाना होगा। वरना तकनीक पीढ़ियों के बीच विभाजन-रेखा खींच सकती है।

एआई के प्रभुत्व से उठ रहा सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या खेल मानवीय त्रुटि, भावनात्मक क्षणों और बेजोड़ हुनर का रंग खो देगा? मेरा जवाब है नहीं, यदि हम चेतन रहें। शतरंज के उदाहरण से अगर समझें तो कम्प्यूटर के आने के बाद डर था कि खेल उबाऊ हो जाएगा, लेकिन मैग्नस कार्लसन, विदित गुजराती और प्रग्गनानंदा जैसे खिलाड़ी उन्हीं इंजनों को चुनौती दे रहे हैं और नई रचनात्मक चालें ढूँढ रहे हैं। एआई स्तर बढ़ाएगी, पर मानवीय कल्पना का हेग्ज़ागोन वही रहेगा।

हमें तीन सूत्र पकड़ने होंगे। पहला, डेटा तक बराबर पहुँच, यदि संसाधन शहर के ही हिस्से हुए, तो सपने भी शहर तक सीमित रह जाएँगे। दूसरा, अंतिम निर्णय इंसानी विवेक एल्गोरिद्म सलाह दे सकता है, मगर खेल की 'कहानी' इंसान ही लिखेगा। तीसरा, खिलाड़ी कल्याण, बीमा, मेंटल हेल्थ, डेटा सुरक्षा सब एक ही ताने-बाने में बुने जाएँ। खेल का उद्देश्य पदक ही नहीं, एक स्वस्थ और नैतिक समाज बनाना भी है।

जब अंतिम सीटी बजती है, तब स्टेडियम की भीड़ भले ही ऐप पर 'परफ़ॉर्मेंस इंडेक्स' देख रही हो, पर उसकी आँखें उस खिलाड़ी पर टिकती हैं जिसने चोटिल घुटने के बावजूद आखिरी छलाँग लगाई। यही मानवीय कथा खेल का हृदय है, जिसे कोई कोड पूरी तरह नहीं लिख सकता। राष्ट्रीय खेल नीति 2025 ने एआई को खेल के दिल से परिचित करा दिया है; अब हमें यह यक़ीन करना होगा कि तकनीक और संवेदना, गति और गरिमा, गणित और कविता ये सब एक ही टीम में खेल सकते हैं, बशर्ते कप्तान इंसान ही रहे।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज ने की जम्मू-कश्मीर के कृषि व ग्रामीण विकास कार्यों की समीक्षा

पीएम मोदी के विकसित भारत के संकल्प के लिए विकसित जम्मू-कश्मीर जरूरी : शिवराज सिंह

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज श्रीनगर स्थित राज्य सचिवालय में मुख्यमंत्री श्री उमर अबदुल्ला के साथ कृषि व ग्रामीण विकास के संबंध में विस्तारपूर्वक समीक्षा बैठक की। बैठक के बाद पत्रकार वार्ता में शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संकल्प है विकसित भारत का निर्माण, और विकसित भारत के लिए विकसित जम्मू-कश्मीर जरूरी है।

मुख्यमंत्री श्री उमर अबदुल्ला के साथ मीडिया से चर्चा में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि कृषि आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था की और जम्मू-कश्मीर की भी रीढ़ है। आज भी लगभग 50 प्रतिशत लोग आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। जम्मू-कश्मीर में तो कृषि और भी ज्यादा लोगों को रोजगार देती है। कृषि को हम और कैसे बेहतर बनाएं, किसानों की ज़िंदगी और कैसे बेहतर हो, इसके लिए विस्तार से समीक्षा की गई है। खुशी है कि मुख्यमंत्री के साथ बैठकर हमने कई मुद्दों पर चर्चा की है। जम्मू-कश्मीर की एक पहल 'किसान खिदमत घर' यह बहुत अच्छी पहल है, जहां एक ही स्थान पर किसानों को कृषि से संबंधित सारी सुविधाएं दी जाती हैं।

श्री चौहान ने प्रसन्नता व्यक्त की कि जम्मू-कश्मीर में बागवानी की कई फसलें होती हैं। सेब, बादाम, अखरोट जम्मू-कश्मीर के किसान मेहनत से पैदा करते हैं, लेकिन एक समस्या यह है कि बागवानी के लिए जो प्लांट लाते हैं, कई बार दो-तीन साल बाद पता चलता है कि उनमें कोई वायरस-बैक्टीरिया आ गया, वे खराब निकल जाते हैं, इसलिए इस बात की जरूरत बताई गई है कि क्लीन प्लांट मिले, मतलब रोगरहित-बीमारियों से मुक्त प्लांट मिले, इस पर काम करने की जरूरत है। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने घोषणा की कि श्रीनगर में केंद्र सरकार की एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच) योजना के तहत 150 करोड़ रुपए लागत का सेंट्रल इंस्टिट्यूट-क्लीन प्लांट सेंटर बनाया जाएगा। इसमें सेब, बादाम, अखरोट, बेरी पर काम होगा, जब क्लीन प्लांट सेंटर आएगा, उसके साथ-साथ प्राइवेट नर्सरी भी विकसित की जाएंगी और उन्हें भी सहायता देंगे ताकि अच्छी नर्सरियां बनें, प्लांट में क्लीन प्लांट बनाए जाएंगे, जो बैक्टीरिया, वायरस रहित रहेंगे और अच्छे पौधे किसानों को मिल पाएंगे।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से वंचित उन किसानों, जिन्हें अधिकृत रूप से सरकार ने पट्टे दिए हैं, लेकिन उनके पास वैधानिक कागजात नहीं है, उनके बारे में भी हम चर्चा करके, जो सरकार की अनुमति से खेती कर रहे हैं, उन्हें पीएम-किसान सम्मान निधि का लाभ मिले, इस दिशा में हम काम करेंगे। श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) में बागवानी फसलों के कवरेज के लिए भी हम RW, VCIS स्कीम जल्दी शुरू करेंगे, ताकि मैपिंग जो बागवानी की फसलों में होती है, वो ठीक ढंग से हो सके और किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि जम्मू क्षेत्र में 'क्षेत्रीय बागवानी केंद्र' की स्थापना की मांग हुई है। उसके लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद यहां की एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी जम्मू को इंफ्रास्ट्रक्चर का सहयोग प्रदान करेगा।

श्री शिवराज सिंह ने बताया कि वर्तमान में सीए (CA) स्टोरेज की सीमा 18 महीने है, जिसे बढ़ाकर ह 24 महीने करने का फैसला किया गया है। बागवानी मिशन में सब्सिडी 5 हज़ार मीट्रिक टन दी जाएगी, यह बात सामने आई थी, लेकिन कई लोगों ने 6 हज़ार मीट्रिक टन तक की क्षमता का निर्माण कर लिया है, हमने इस समस्या के समाधान का भी फैसला किया है। 6 हज़ार मीट्रिक टन क्षमता का निर्माण भी कर लिया तो भी निश्चित सीमा 5 हज़ार मीट्रिक टन तक उन्हें सब्सिडी का लाभ दिया जाएगा। इसी प्रकार से ICAR के सहयोग से विश्वविद्यालय के साथ समझौता-ज्ञापन का भी फैसला किया है।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि केसर यहां की विशेषता है, पहचान है, इसलिए टिश्यू कल्चर लैब, नर्सरी की स्थापना केंद्र सरकार यहां करेगी, जिससे उत्पादन बढ़ेगा। 'राष्ट्रीय केसर मिशन' में जम्मू कश्मीर की विशिष्टताओं को देखते हुए संशोधन की आवश्यकता है। उत्पादकता बढ़ाने और नुकसान कम करने के लिए हम वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की टीम का गठन करेंगे। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि मिट्टी के स्वास्थ्य और उर्वरता के इनपुट विनियमन के लिए क्वॉलिटी कंट्रोल लैब जरूरी है, इसलिए कठुआ, बारामुला, अनंतनाग में क्वॉलिटी कंट्रोल लैब स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि आरकेवीवाई (RKVY) के अंतर्गत डेडीकेटेड इरिगेशन प्रोजेक्ट कमांड एरिया पर भी हम काम करेंगे। केनल से खेत तक पानी पहुंचाने के अंतर को कम करने की दिशा में प्रयास किए जाएंगे।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का यहां दौरा हुआ था, जिसमें उन्होंने घोषणा की था कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण में 4,200 करोड़ रूपए से भी ज्यादा की राशि का आवंटन किया जाएगा, जिससे ग्रामीण बसाहटों को रोड कनेक्टिविटी मिलेगी। प्रसन्नता की बात है कि इस दिशा में जम्मू-कश्मीर सरकार ने तेजी से काम किया है, उन बाकी सड़कों के निर्माण का कार्य भी जल्द ही प्रारंभ कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पीएम आवास योजना में 93त्न आवास बन चुके हैं। जो बच गए हैं, उन्हें भी मकान दिए जाएंगे। 5 लाख लोगों के नाम आए हैं, वेरिफिकेशन के बाद पात्र हितग्राहियों को मकान दिया जाएगा। ग्रामीण गरीबी दूर करने के लिए माताओं-बहनों को NRLM के तहत स्वयं सहायता समूह के माध्यम से लखपति दीदी बनाने का काम किया जा रहा है। केवल लखपति दीदी नहीं, मिलियन दीदी भी यहां बन रही हैं, जिनकी सालाना आमदनी 10 लाख रुपये से ज्यादा है।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि इस साल मनरेगा में मजदूरों को काम मिल सके, इसके टारगेट दिए हैं, इस पर काम हो रहा है। युवाओं को रोजगार के लिए प्रशिक्षण भी अब शुरू किया जाएगा। 'किसान क्रेडिट कार्ड' में भी कोई शेष रह गया हो, तो उन्हें भी जोड़ने का काम किया जाएगा।

अंत में केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि उपलब्धियों पर हमें गर्व है, केंद्र की योजनाओं का क्रियान्वयन भी बेहतर ढंग से हो रहा है। प्रधानमंत्री जी के संकल्प और यहां की टीम की मंशा के अनुरूप हम जम्मू-कश्मीर को पूरी ताकत से विकास की दिशा में ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। श्री चौहान ने मुख्यमंत्री को भी धन्यवाद दिया और आगे भविष्य में भी जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए मिलकर तेजी से काम का आश्वासन जताया।

एम्स भोपाल में विशाल गॉइटर से पीड़ित महिला का सफल ऑपरेशन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान न केवल चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता को निरंतर सशक्त बना रहा है, बल्कि जटिल रोगों के उपचार में भी उत्कृष्टता स्थापित कर रहा है। इसी क्रम में, जनरल सर्जरी विभाग की विशेषज्ञ टीम ने एक 65 वर्षीय महिला का सफल ऑपरेशन कर एक अत्यंत जटिल चिकित्सीय स्थिति में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। यह महिला वर्षों से विशाल गॉइटर की समस्या से पीड़ित थीं, जो हाल के दिनों में गंभीर रूप ले चुकी थी। गॉइटर के अत्यधिक बढ़ने के कारण उन्हें सांस लेने में भारी परेशानी होने लगी थी और उनकी आवाज़ में भी स्पष्ट परिवर्तन आ गया था। स्वास्थ्य की इस बिगड़ती स्थिति को देखते हुए उन्होंने एम्स भोपाल के जनरल सर्जरी ओपीडी में परामर्श लिया, जहाँ चिकित्सकों ने तुरंत परीक्षण कर उन्हें भर्ती कर लिया। जांचों में सामने आया कि गॉइटर का आकार इतना अधिक बढ़ चुका था कि उसने श्वास नली (ट्रेकिया) सहित गर्दन की अन्य महत्वपूर्ण संरचनाओं पर दबाव डालना शुरू कर दिया था। इससे स्थिति अत्यंत संवेदनशील और जीवन के लिए जोखिमपूर्ण हो गई थी। ऐसे में सर्जरी करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इस जटिल सर्जरी का सफल नेतृत्व जनरल सर्जरी विभाग के प्रो. (डॉ.) मनीष स्वर्णकार और डॉ. कृष्ण कुमार ने किया। कई घंटों तक चले इस ऑपरेशन के दौरान थायरॉयड ग्रंथि को अत्यंत सावधानीपूर्वक हटाया गया, ताकि आवाज़ की नसें (रिकरेंट लैरिंजियल नर्व) और पैरा-थायरॉयड ग्रंथियाँ सुरक्षित रह सकें। सर्जरी पूरी तरह सफल रही और मरीज अब डॉक्टरों की निगरानी में तेजी से स्वस्थ हो रही हैं। सर्जरी की सफलता पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए प्रो. (डॉ.) मनीष वर्णकार ने कहा, थायरॉयड संबंधी रोगों की समय पर पहचान और उचित उपचार बेहद आवश्यक है। अगर थोड़ी और देर होती, तो यह स्थिति मरीज के जीवन के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हो सकती थी।

इस सफलता पर कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, इस जटिल सर्जरी की सफलता एम्स भोपाल की चिकित्सकीय दक्षता, टीम भावना और सेवा के प्रति गहरे समर्पण को दर्शाती है। हमारा प्रयास सिर्फ उन्नत उपचार देना नहीं, बल्कि हर ज़रूरतमंद को समय पर जीवनरक्षक समाधान उपलब्ध कराना है, ताकि स्वास्थ्य सेवाएं वास्तव में जनकल्याण का माध्यम बन सकें।

भोपाल में 11 तहसीलदार इधर से उधर: हर्ष विक्रम की बैरागढ़ में पोस्टिंग; पारे हुजूर, चौरसिया बैरसिया पहुंचे

भोपाल। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने गुरुवार को तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को इधर से उधर किया है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने गुरुवार को तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को इधर से उधर किया है। भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने 11 तहसीलदार और 11 नायब तहसीलदारों में काम का बंटवारा करते हुए उन्हें इधर से उधर किया है। रायसेन से ट्रांसफर होकर भोपाल आए हर्षविक्रम सिंह की बैरागढ़ में पोस्टिंग की गई है। वहीं, आलोक पारे को हुजूर और दिलीप चौरसिया को बैरसिया भेजा गया है।

हुजूर में पारे तहसीलदार और अनुराग त्रिपाठी अपर तहसीलदार होंगे। कोलार में यशवर्धन सिंह तहसीलदार और एनएस परमार अपर तहसीलदार होंगे। बैरसिया में भूपेंद्र कैलासिया अपर तहसीलदार की भूमिका में रहेंगे।

वहीं, बैरागढ़ में खूनी प्रसाद पडोले को अपर तहसीलदार की जिम्मेदारी दी गई है। गोविंदपुरा में तहसीलदार सौरभ वर्मा और अपर तहसीलदार राजेश गौतम रहेंगे। टीटी नगर की कमान कुनाल रावल और अपर तहसीलदार सुनीता देहलवार होंगी। एमपी नगर में दीपक कुमार द्विवेदी तहसीलदार और अंकिता यदुवंशी को अपर तहसीलदार की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं, शहर वृत्त में तहसीलदार करुणा कंडोतिया और अपर तहसीलदार दृष्टि चौबे की पोस्टिंग की गई है। दंडोतिया अब तक बैरसिया में पदस्थ थीं।

नायब तहसीलदार भी पदस्थ किए- कोलार में अतुल शर्मा, बैरसिया में राजेंद्र त्यागी, बैरागढ़ में दिनकर चतुर्वेदी, गोविंदपुरा में दिनेश कुमार साहू, टीटी नगर में निधि तिवारी और एमपी नगर में दुर्गा पटले को नायब तहसीलदार के तौर पर पदस्थ किया गया है।

सिंह को भू-अभिलेख की जिम्मेदारी- भू-अभिलेख की प्रभारी अधीक्षक पहले दुर्गा पटले थीं। जिन्हें एमपी नगर वृत्त में भेजा गया है। ऐसे में यह जिम्मेदारी अब अशोक सिंह को दी गई है। प्रभारी नायब तहसीलदार रामजी तिवारी को एडीएम उत्तर ऑफिस में अटैच किया गया है। नायब तहसीलदार अनामिका सराफ प्रसूति अवकाश पर है। उन्हें लौटने पर जिम्मेदारी दी जाएगी।

इसी तरह प्रभारी नायब तहसीलदार मो. इदरीश खान को टीटी नगर, परिविक्षाधीन नायब तहसीलदार तरुण श्रीवास्तव को भू-अभिलेख ऑफिस में अटैच किया गया है। शुभम जैन को हुजूर कार्यालय में भेजा गया है। प्रभारी नायब तहसीलदार राकेश पिप्पल, मिट्ठूलाल पंवार, प्रेमप्रकाश गोस्वामी को भी अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई है।

हेटिक एवं इंटेल मेडिकैप्स के साथ बने शिक्षा में भागीदार

इंदौर। शिक्षा और उद्योग जगत के बीच की दूरी को काम करने के लिए मेडिकैप्स यूनिवर्सिटी लगातार प्रयासरत है। यूनिवर्सिटी ने हेटिक और इंटेल के साथ करार कर इस दिशा में एक और बड़ी सफलता हासिल की है। मेडिकैप्स यूनिवर्सिटी हेटिक के साथ मिलकर प्रदेश में पहला सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस खोलने जा रही है, जबकि इंटेल इंटेल उन्नति लैब तैयार करेगी।

मेडिकैप्स यूनिवर्सिटी कैंपस में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कुलगुरु प्रोफेसर दिलीप कुमार पटनायक ने बताया कि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में एडवांस मैन्युफैक्चरिंग, स्मार्ट फर्नीचर टेक्नोलॉजी और ऑटोमेशन में स्टूडेंट्स को हेटिक के ग्लोबल स्टैंडर्ड के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रोफेसर दिलीप कुमार पटनायक के अनुसार इंटेल की उन्नति लैब स्टूडेंट्स, शोधकर्ताओं ओर फैकल्टी को डाटा केंद्रित टेक्नोलॉजी में प्रयोग के लिए यूनिक प्लेटफार्म उपलब्ध कराती है। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस - हेटिक से करार के तहत यह सेंटर मैकेनिकल, प्रोडक्शन और मेट्रोनिक्स इंजीनियरिंग में डिप्लोमा एवं बी.टेक. के साथ एडवांस मैन्युफैक्चरिंग में एम.टेक./पी.एच.डी. स्टूडेंट्स के लिए बड़ी सुविधा होगी। यहां हेटिक टूल्स पर ट्रेनिंग के साथ उद्योग जगत में मान्य प्रमाणपत्र और टॉप परफॉर्मर को गारंटीड इंटर्नशिप का अवसर मिलेगा। हेटिक और उसकी पार्टनर कंपनियों में प्लेसमेंट में भी सेंटर के स्टूडेंट्स को प्राथमिकता मिलेगी। यहां हेटिक के इंजीनियर विजिटिंग फैकल्टी के तौर पर स्टूडेंट्स को तैयार करेंगे।

इंटेल उन्नति प्रोग्राम - इंटेल और मेडिकैप्स यूनिवर्सिटी में हुए करार के अनुसार बी.टेक. कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग

(एआई एंड डेटा एनालिटिक्स) कोर्स तैयार किया गया है। यह मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और बिग डेटा एनालिटिक्स के प्रेक्टिकल एप्लिकेशंस पर केंद्रित है। इसके लिए इंटेल यूनिवर्सिटी कैंपस में हाई परफॉर्मेंस कम्प्यूटिंग सर्वर और ए.आई /एम् .एल. टूल्स के साथ इंटेल उन्नति लैब बनाएगी। जहां स्पेशल कोर्स का 30 प्रतिशत पार्ट इंटेल के एक्सपर्ट पढ़ाएंगे। स्टूडेंट्स को इंटेल और उसकी पार्टनर कंपनियों में 4 से 8 सप्ताह की इंटर्नशिप का मौका प्रदान किया जाएगा। गुरुवार को यूनिवर्सिटी में दोनों कंपनियों से हुए करार के समय हेटिक के एमडी आंद्रे एकोल्ट, सीएचआरओ अमित प्रसाद, इंटेल के नेशनल बिजनेस मैनेजर शांतनु रॉय चोधरी मेडिकैप्स के डीन इंजीनियरिंग डॉ. प्रमोद नायर, कंप्यूटर साइंस विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) रत्नेश लिटोरिया, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष चित्रेश नायक, डायरेक्टर पब्लिक रिलेशन सुजीत सिंहल सहित सभी डीन एवं वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। मेडिकैप्स इससे पहले दिग्गज टेक कंपनियों एलटी., आई. बी. एम् से भी करार कर इंजीनियरिंग शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार कर चुकी है।

पत्नी के घूंघट नहीं करने पर तीन साल के पुत्र को जमीन पर पटका था, मौत

उज्जैन। बड़नगर में पत्नी ने घूंघट नहीं किया तो पति ने तीन साल के पुत्र को जमीन पर पटक दिया था। इससे पुत्र को गंभीर हालत में उज्जैन के निजी अस्पताल में भर्ती किया गया था। इलाज के दौरान गुरुवार को उसकी मौत हो गई। पुलिस पहले ही आरोपित पिता को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। अब उसके खिलाफ हत्या का केस चलेगा।

बड़नगर पुलिस ने बताया कि ग्राम उमरिया निवासी महिला ने 29 जून को शिकायत की थी कि वह अपने पति आजाद शाह के साथ बड़नगर आई थी। यहां बाजार से खरीदी करने के बाद पैदल ही अपने तीन साल के पुत्र तनवीर को लेकर ग्राम उमरिया जाने लगे थे। उसी दौरान आजाद ने अपनी पत्नी की गोद में से पुत्र तनवीर को छीन लिया और अपनी गोद में रख लिया। बारिश के कारण महिला घूंघट नहीं कर पा रही थी। इस पर आजाद ने उससे अभद्रता की और कहा कि घूंघट नहीं किया तो वह पुत्र तनवीर को जमीन पर पटक कर जान से मार देगा। महिला ने घूंघट नहीं किया तो उसके पति आजाद शाह ने पुत्र तनवीर को जमीन पर पटक दिया जिससे पुत्र के सिर, हाथ, पैर व शरीर में गंभीर चोट लगने पर उसे उज्जैन के निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। इलाज के दौरान बालक की मौत हो गई।

भारी बारिश के चलते मंडला के कई गांवों में बाढ़, होमगार्ड तैनात

शिवपुरी में उफनती सिंध नदी पार कर रहे लोग, भोपाल में कहीं रिमझिम, कहीं तेज बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में गुरुवार को कई जिलों में भारी बारिश हो रही है। मंडला के बिछिया इलाके में लगातार बारिश से कई गांवों में बाढ़ के हालात बन गए हैं। होमगार्ड जवान यहां मौजूद हैं। अब तक 70 लोगों को सुरक्षित जगह पर पहुंचाया जा चुका है। शिवपुरी में ग्रामीण बच्चों और महिलाओं को गोद में उठाकर उफनती सिंध नदी पार करवा रहे हैं।

शिवपुरी के कोलारस में कई गांव जलमग्न हो गए हैं। बारिश का पानी स्कूल, मंदिर और घरों में घुस गया है। निवाड़ी के ओरछा में भी भारी बारिश हो रही है। उमरिया में कथली नदी का पानी पुल तक पहुंच गया है। जिले में महानदी में भी पानी बढ़ गया है। भोपाल में कहीं रिमझिम, कहीं तेज बारिश हुई।

प्रदेश के पूर्वी हिस्से- जबलपुर, सागर, रीवा और शहडोल संभाग के 17 जिलों में अति भारी या भारी बारिश का अलर्ट है। ग्वालियर-चंबल संभाग के 4 जिले भी भीगेंगे। स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव होने से ऐसा होगा। भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत अन्य जिलों में भी बारिश का यलो अलर्ट है।

मौसम विभाग के अनुसार, जिन जिलों में अति भारी बारिश का अलर्ट है, उनमें पन्ना, दमोह, मैहर और कटनी शामिल हैं। यहां 24 घंटे में 8 इंच तक पानी गिर सकता है। श्योपुर, शिवपुरी, भिंड, गुना, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, जबलपुर, डिंडौरी, अनूपपुर, उमरिया, शहडोल, सीधी, मऊगंज, रीवा और सतना में भारी बारिश की चेतावनी दी गई है।

भोपाल में कहीं रिमझिम, कहीं तेज बारिश- भोपाल में रुक-रुककर रिमझिम और तेज बारिश का दौर जारी है। हालांकि सुबह के समय मौसम खुला था। धूप भी निकली। दोपहर बाद बादल छाए गए और बारिश होने लगी।

शिवपुरी में उफनती सिंध नदी पार कर रहे ग्रामीण- शिवपुरी के कोलारस के गोरा गांव सिंध नदी उफान पर है। ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को हाथों पर उठाकर नदी पार कर रहे हैं। तेज बहाव के बीच ग्रामीण अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं।

शिवपुरी के कोलारस में कई गांवों में भरा पानी- शिवपुरी के कोलारस में बारिश जारी है। नदियां उफान पर हैं। कई गांव जलमग्न हो गए हैं। बारिश का पानी स्कूल, मंदिर और घरों में घुस गया है, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

मंडला समेत 6 जिलों में 8 इंच तक गिर सकता है पानी

मंडला में मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे में भारी बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया है। मंडला के साथ ही बालाघाट, डिंडौरी, कटनी, मंडला, सिवनी में अलग-अलग स्थानों पर 8 इंच तक पानी गिरने की चेतावनी जारी की है। मंडला जिले में भारी बारिश हो रही है। बिछिया इलाके में नदी-नाले उफान पर है। इससे कई गांवों में बाढ़ के हालात बन गए हैं। पुलिसकर्मी यहां मौजूद हैं।

निवाड़ी के ओरछा में मूसलधार बारिश

निवाड़ी जिले के ओरछा में दोपहर करीब 12 बजे मूसलधार बारिश हो रही है। ये दो वीडियो प्रसिद्ध चतुर्भुज मंदिर के पास के हैं। जिले में मानसून आने के बाद से रोज बारिश हो रही है। दो दिन पहले हुई बारिश से सातार नदी उफान पर आ गई। इससे टीकमगढ़ और ओरछा का संपर्क पूरी तरह टूट गया था।

उमरिया में पुल तक पहुंचा कथली नदी का पानी

उमरिया जिले में लगातार बारिश के बाद नदी-नालों में जलस्तर बढ़ गया है। कथली नदी का पानी पुल तक पहुंच गया है। महानदी में भी पानी बढ़ गया है।

एमपी से गुजर रही दो ट्रफ

प्रदेश से 2 ट्रफ गुजर रही है। इनमें से एक मानसून ट्रफ है। इस वजह से पूरे प्रदेश में तेज बारिश का दौर चल रहा है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि अगले 4 दिन तक पूरे प्रदेश में तेज बारिश होने की संभावना है। 5 और 6 जुलाई को सभी जिले तरबतर हो जाएंगे।

बागेश्वर धाम में टेंट गिरा, श्रद्धालु की मौत

भगदड़ में 8 घायल ; अयोध्या से धीरेंद्र शास्त्री का जन्मदिन मनाने आए थे

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर जिले में गढ़ा गांव स्थित बागेश्वर धाम परिसर में टेंट गिर गया। लोहे का एंगल सिर में लगने से एक श्रद्धालु की मौत हो गई जबकि भगदड़ में 8 लोग घायल हुए हैं।

हादसा गुरुवार सुबह करीब 7 बजे आरती के बाद हुआ। बारिश से बचने के लिए श्रद्धालु टेंट के नीचे इकट्ठा हुए थे। घायलों को छतरपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मृतक श्याम लाल कौशल के दामाद राजेश कुमार कौशल ने बताया कि वे उत्तर प्रदेश में गोंडा जिले के मनकापुर गांव के रहने वाले हैं। ससुराल बस्ती जिले के चौरी सिकंदर पुर गांव में है। परिवार के 6 लोग कार से बुधवार रात बागेश्वर धाम आए थे। शुक्रवार को धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र शास्त्री का जन्मदिन है। इससे पहले गुरुवार सुबह सभी लोग तैयार होकर शास्त्री के दर्शन करने पहुंचे थे।

बुजुर्ग की मौके पर ही मौत- राजेश ने बताया कि लोहे का एंगल उनके ससुर श्यामलाल कौशल (50) के सिर में लगा। उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्ट्म के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है। सिविल सर्जन शरद चौरसिया ने बताया- बागेश्वर धाम में टेंट गिरने से एक शख्स की मौत हो गई। 2 लोगों का इलाज किया जा रहा है। 6 लोगों को मामूली चोटें आई थी।

प्रत्यक्षदर्शी बोले- टेंट में बारिश का पानी भरा- राजेश कुमार कौशल के साथ आए उनके पड़ोसी आर्यन कमलापुरी ने बताया- हम सब मंच के पास खड़े थे, बारिश हो रही थी। पानी से बचने के लिए टेंट में आ गए। पानी भरने से टेंट नीचे आ गिरा। इससे भगदड़ मच गई। टेंट के नीचे करीब 20 लोग दब गए। बमीठा थाना प्रभारी आशुतोष श्रोत्रिय ने कहा- बागेश्वर धाम में बारिश की वजह से टेंट गिर गया था। मामले की जांच की जा रही है।

धीरेंद्र शास्त्री बोले-फेंक न्यूज, दो दिन कार्यक्रम रद्द- हादसे पर धीरेंद्र शास्त्री का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि आज सुबह हादसा हो गया है। किसी ने गलत न्यूज़ चला दी कि टीन शेड गिर गया है, इसलिए वह पोस्ट सुबह से ही वायरल हो रही है।

हमारे पंडाल से दूर जहां पुराना दरबार लगता था, वहां अत्यधिक बारिश के कारण पॉलिथीन का पंडाल था। उसमें पानी भरा और वह नीचे सो रहे उत्तर प्रदेश के व्यक्ति और अन्य भक्तों के ऊपर गिर गया।

एक सज्जन अधिक घायल हो गए थे, जिन्हें इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां उनकी मौत हो गई। बाकी को मामूली चोटें आई थीं। वह वापस धाम भी आ गए। धाम पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों को स्थगित किया जाता है।

अश्लील वीडियो बनाने से रोका तो पत्नी को मार डाला

बोला- मैं जैसा कहता, वैसा नहीं करती थी ; पोर्न देखने का एडिक्शन था

भिंड (नप्र)। भिंड जिले के एक गांव में एक नवविवाहिता की दर्दनाक हत्या ने सनसनी फैला दी। आरोपी पति आपत्तिजनक वीडियो देखने का आदी था और पत्नी के साथ भी वैसे ही वीडियो बनाने का दबाव डालता था। विरोध करने पर उसने धारदार चाकू से पहले हमला किया और फिर पत्नी की गला दबाकर हत्या कर दी। पुलिस जांच में पति के मोबाइल से मिले आपत्तिजनक वीडियो और ब्राउजर हिस्ट्री ने इस खौफनाक वारदात की असली वजह को उजागर कर दिया। दरअसल, भिंड के उमरी थाना क्षेत्र के फुले का पुरा गांव के रहने वाले जबरसिंह जाटव ने 25-26 जून की रात अपनी पत्नी का मर्डर कर दिया। उसकी शादी लाला का पुरा गांव की रहने वाली गोल्डी के साथ महज 4 महीने पहले ही 10 फरवरी को हुई थी।

हमीदिया रोड पर बेकाबू बोलेरो ने युवक को मारी टक्कर, ड्राइवर पर नशे में होने का आरोप

भोपाल (नप्र)। गुरुवार दोपहर करीब 12:28 बजे हमीदिया रोड पर एक तेज रफ्तार बोलेरो वाहन ने सड़क किनारे खड़े दोपहिया वाहन को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे का वीडियो पास की एक दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गया है। घटना के तुरंत बाद का एक और वीडियो भी सामने आया है, जिसमें स्थानीय लोग बोलेरो को पुलिस की गाड़ी बता रहे हैं और उसमें शराब रखे होने का दावा कर रहे हैं।

बताया जा रहा है कि बोलेरो की रफ्तार काफी तेज थी और उसका चालक नशे में था। टक्कर के बाद गाड़ी को मौके से हटा दिया गया, लेकिन थोड़ी ही देर में वहां स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई। लोगों ने गाड़ी के अंदर शराब की बोतलें रखी होने की बात भी कही है, हालांकि इसकी अभी तक पुष्टि नहीं हुई है।

पुलिस ने बोलेरो जब्त कर शुरू की जांच

घटना की जानकारी मिलते ही हनुमानगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंची। थाना प्रभारी अवधेश सिंह भदौरिया ने बताया कि,बोलेरो से एक्सीडेंट की सूचना मिली थी। एक युवक को मामूली चोट आई है, वह गंभीर रूप से घायल नहीं है।